मैथिली

राहुल सांकृत्यायन

प्रभाकर माचवे

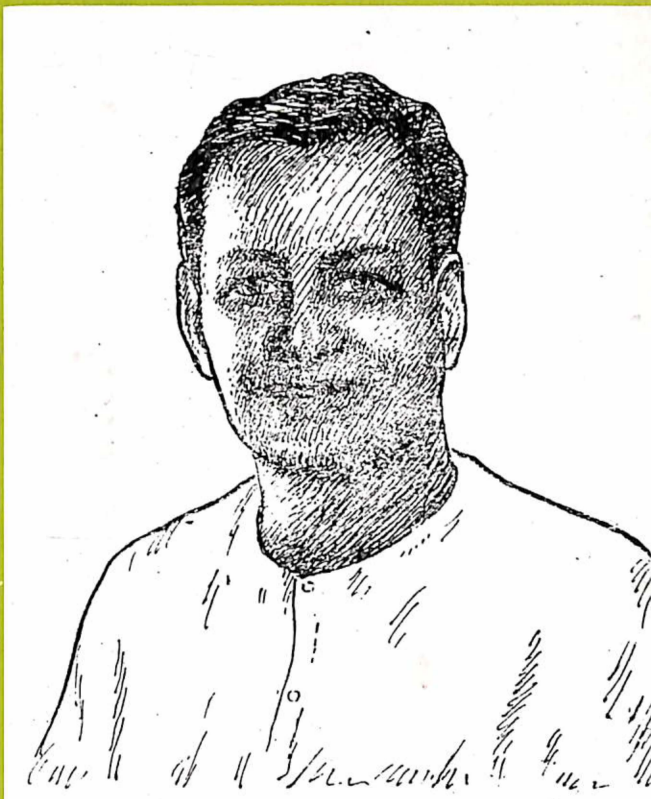

MT
813.2
Sa 58 M
भारतीय
साहित्यक

MT
813.2
Sa 58 M

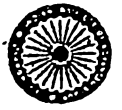

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

राहुल सांकृत्यायन

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माय रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कए रहल छथि । हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिवद्ध कए रहल छथि । भारतमे लेखनकलाक ई प्राय: सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक ।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

राहुल सांकृत्यायन

लेखक

प्रभाकर माचवे

अनुवादक

प्रमोद कुमार झा

साहित्य अकादेमी

Rahul Sankrityayan : Maithili translation by Pramod Kumar Jha of Prabhakar Machwe's monograph in English. Sahitya Akademi. New Delhi (1997), Rs. 25.

Library IIAS, Shimla
MT 813.2 Sa 58 M
00117120

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९७

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय

जीवनतारा भवन, चौथी मंज़िल, २३ ए/४४ एक्स.,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई ६०० ०१८
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर,
मुम्बई ४०० ०१४
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

MT
813.2
Sa 58M

मूल्य : पचीस टाका

ISBN 81-260-0179-8

117120
9.12.04
SHIMLA

लैज़रसैटिंग वैलविश पब्लिशर्स,
पीतमपुरा, दिल्ली ११० ०३४

मुद्रक कलरप्रिंट,
दिल्ली ११० ०३२

विषय सूची

भूमिका ७
जीवन १२
कृतित्व २८
साहित्य के योगदान ३५

परिशिष्ट १
राहुल क जीवन क प्रमुख घटना सव ४९
परिशिष्ट २
राहुल सांकृत्यायन क कृति सव ५१

भूमिका

महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन क जीवन आ कृतित्व क विषय मे पुस्तिकाक रचना करव कोनो लेखकक लेल एक चुनौती भरल आ कठिन विषय छैक, कारण एक त हुनका पर कोनो नीक सर्व-ग्राही पोथी, हिन्दीयो मे, नहि छैक : आ दोसर, हुनक कृति सभक विस्तार, विविधता आ व्यापकता एतेक बेसी आओर विशद् छलन्हि जे हुनक कृतित्वक समस्त आयाम पर विवरण सहित लिखव असंभव । उदाहरणक लेल हुनकर आत्मकथे के लऽ ली, जकर नाम छैक ''मेरी जीवन यात्रा'' । दू खंड, जे १९४४ आ १९५० मे छपल आ जकर पुनर्मुद्रण नहि भेल, क्रमशः ५६४ आ ७८३ पृष्ठक अछि: आ ओहि मे हुनकर व्यस्त जीवन क १९४४ धरि क घटना सभक वर्णक छैक । तीन खंड मरणोपरान्त प्रकाशित भेलैक, मुदा ओहू मे हुनकर जीवन क अंतिम वरख क विवरण नहि छन्हि । हुनक अनेक डायरी सब एखन अप्रकाशित छन्हि । एहि प्रकारे जौ राहुल द्वारा अपना वारे मे लिखल ई तीन हजार पृष्ठक परिचय के एक छोट अध्याय मे संक्षिप्त रूप मे देवाक हो, त ओ मात्र रूपरेखा टा होएत । सएह बात हुनक कृति सभक विषय मे सही छैक । परिशिष्ट मे हुनक पांच भाषा मे प्रकाशित सवा सौ, पोथी सभक सूची देल गेल छैक: ओ भाषा सभ छैक, हिन्दी, संस्कृत, पालि, तिब्बती आ भोजपुरी । ओहि मे जाहि विषय सभ पर ओ लिखने छथि ओकर वहुविध रूप तेना छैक जे ओहि मे दर्शन, इतिहास, समाज विज्ञान, विज्ञान, यात्रा साहित्य, जीवनी, उपन्यास, कथा, नाटक, निवंध, कोश-विज्ञान, व्याकरण, पाठानुसंधान, शोध, तिब्बत विद्या, वौद्ध धर्म, लोक साहित्य, राजनीति आ एतए धरि जे पर्चेवाजी सेहो छैक । हुनकर प्रकाशित रचना सभ मे एतेक समानता आ विविधता छलन्हि जे अनुवाद सव लगा कए, तिब्बती आ संस्कृत क पाठशाला सब सेहो छलैक, आ अत्यंत गंभीर आ मूल्यवान सामग्री छलैक: जेना धर्म कीर्ति केर बौद्ध-न्याय पर लिखल ''वार्तिका'' सभक टीका सभ । हुनकर साहित्यिक अवदान क गुणवत्ता एतेक अनगढ़ छलन्हि जे हुनकर समस्त पोथी सभक पहिल प्रभाव एकदम स्तंभित क दैत छैक जे कतेक अद्भुत विद्वत्ता छलन्हि हुनका मे आ केहन अविश्रांत पथिक आ समाज परिवर्तनकारी छलाह ओ । एहि गप्पक आश्चर्य होइत अछि जे कोना एक व्यक्ति जे कोनो व्यवस्थित विश्वविद्यालय मे शिक्षा नहिं पओलक आ जकरा लग काज करबाक लेल कोनो स्थायी स्थान नहि छलैक, जे अपन नाम आ धर्म बेर-बेर बदलैत रहल आ जे अपन आत्मकथा के मुख्य सूत्र क रूप मे बुद्ध क वचन ओ उद्धृत कएने

छलाह—''हम ज्ञान के अपन यात्रा मे नाव जेका लेलहुं, माथ पर क बोझ जेकाँ नहि'', (बुद्धक एहि वाक्य के ओ अपन आत्मजीवनी मे मार्गदर्शक नीति जकाँ उद्धृत करैत छथि) एकटा बहुभाषाविद् आ विश्व—पर्यटक, एतवा सब लिखि सकलाह । तिब्बत एहन वर्जित प्रदेश क दुर्गम यात्रा सभ क बाधा आ राष्ट्रीय आन्दोलन क राजनैतिक संघर्ष मे कारावास क कठिनाई सभक बादो एतेक ग्रंथ ओ कोना लिखलनि । जतबए राहुल क विषय मे जानब ओतबए एहि स्वयं निर्मित व्यक्तित्व क जीवाक आ कष्ट सहन क शक्ति नव-नव ज्ञान क प्रति हुनक अनिर्व्याष्य भूख आ विवेकवादी स्वतंत्रताक एहि पुजारी क प्रति मोन मे प्रशंसा क भाव बढ़ि जाइत छैक । ई अत्यंत दु:खद घटना अछि जे एहन दुर्दभ्य आ साहसिक उन्नायक क अंत स्मृति-भ्रंश क दीर्घ आघात स भेलन्हि आ १९६३ मे हुनक मृत्युक बाद आई धरि किछु भावुक श्रद्धाँजलि छोड़ि कें, बहुत कम लिखल गेल अछि हुनकर विषय मे । डा. वासुदेवशरण अग्रवाल महाराज सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय क त्रैमासिक पत्रिका मे एकगोट लेख अंग्रेजी मे लिखलनि, आ वेह टा एक उल्लेखनीय अपवाद थीक ।

राहुल क उपलब्धिये जकाँ हुनकर व्यक्तित्व सेहो अत्यंत प्रभावशाली आ संस्मरणीय छलन्हि । राहुल तिब्बत से घुरलाह त सुप्रसिद्ध इतिहासकार काशीप्रसाद जायसवाल ''मार्डन रिव्यू'' मे एक टा लेख लिखलनि जे एहन दुलर्भ पांडुलिपि सब, चित्र आ दुर्मिल पोथी सब आनऽ वाला राहुल अपन बाह्य रूप आ कांति मे बुद्ध जेकां लगैत छथि । अमृत राय अपन मंतव्य लिखने छथि—ओ छौ फीट लंबा, चाकर माथ, उन्नत वक्ष, भरल कान्ह वाला एहन प्राचीन आर्य सन लगैत छथि जे सुप्रसिद्ध फ्रांसिसी प्राच्यविद्याविंदु सिलवें लेवी के हुनका देखि भगवान बुद्ध स्मरण भऽ अयलथीन्ह'' । राहुल क सौम्य आ भव्य आकृति के देखि हिंदी लेखक वृंद के कतेको उपमाक स्मरण भऽ अयलिन । भगवतशरण उपाध्याय हुनका एक टा 'स्तंभ' जकाँ कहैत छलाह, ठाकुर प्रसाद सिंह 'वटवृक्ष' जकाँ आ विद्यानिवास मिश्र लिखने छथि, ''ओ हिमालय क प्रेमी छलाह, हिमालय लग ओ गेलाह आ ओही पर्वत माला सभ मे एकाकार भऽ गेलाह'' । हुनकर आकर्षक देहयष्टि जेकां हुनकर मष्तिष्क आ हृदयक गुण सेहो अत्यंत आकर्षक छलन्हि । ओ एक उदार प्रकृत मानवतावादी अटल परम्परा विरोधी रूढ़ि भंजक छलाह ।

उत्तरप्रदेश क आजमगढ़ जिला मे एक टा छोट सन गाम मे एक सनातनी सरयूपारीण ब्राहमण परिवार मे, जन्भ लऽ कए ई बालक बहुत नान्ह बएस मे ज्ञान आ काज तकैत घर सँ पड़ा गेलाह । हिनकर मूल नाम छलन्हि केदारनाथ पांडे । बनारस मे परंपरागत ढंग सँ ओ संस्कृत अरबी आ फारसी सिखलनि मुदा आन तीस भाषा जे ओ जनैत रहथि से ओ स्वत: अर्जित कएलनि । अपन जन्म-नाम आ सनातनी हिंदू आस्था के बदलि ओ बाबा राम उदार दास बनि एक भटकैत सन्यासी बनि गेलाह आ तकर बाद आर्यसमाजी बनि गेलाह । आर्यसमाज क वैदिक हठधर्मिता सँ असंतुष्ट भए ओ पीत चीवर पहीरि

नेपाल आ श्रीलंका क भ्रमणक वाद नियमनिष्ट (धर्मसंघी) वौद्धभिक्षु बनि गेलाह । ओ पालि, सिंहली आ तिब्वती मे वौद्ध ग्रंथ के पढ़लनि आ 'महापंडित' एवं ''त्रिपिटकाचार्य'' (जे थेरवाद वौद्ध धर्मक तीनू घिटक क पूर्ण अध्ययन कयने हो) क उपाधि से विभूपित भेलाह । एहि से प्रेरित भए ओ लामा सभक देश मे अपन जानक वाजी लगा अत्यंत दुर्गम पथ सँ एकटा वौक साधू क रूप मे तिब्वती सिखवाक लेल पहुंचलाह । ओ वौद्ध धर्मप्रचारक क रूप मे यूरोप सेहो गेलाह आ ओहि ठाम अनेक प्राच्यविद्या विशारद सँ भेंट कयलनि । मुदा यूरोप हुनका आकर्पित नहि कयलकन्हि, आ ओ अमेरिका मे वौद्ध धर्म क प्रचार करवा क आमंत्रण सेहो अस्वीकार कऽ देलनि ।

हुनक जीवन क एहि अवस्था मे मार्क्सवाद हुनका एतवा वेसी आकृष्ट कएलकन्हि जे १९३५ मे सोवियत रूस क पहिल यात्रा क वाद ओ एक कट्टर समाजवादी प्रचारक बनि गेलाह । ओ किसान सभा आ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस क सक्रिय राजनीति मे प्रवेश कयलन्हि । ओ १९३७, १९४४ आ १९६२ मे तीन बेर फेर सोवियत रूस गेलाह । दुर्भाग्य सँ अंतिम वेरक यात्रा इलाजक लेल छलन्हि, जखन हुनका स्मृति-विभ्रम भेल छलन्हि मुदा विना ठीक भेने ओ घुरि अयलाह । १९ नवम्वर १९३९ मे ओ मुंगेर मे कम्युनिस्ट पार्टी क सदस्य वनलाह आ नौ बरख धरि कम्युनिस्ट वनल रहलाह । जनवरी १९४८ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन वम्वई मे अध्यक्षीय भापणक कारण भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी हुनका सदस्यता सँ निरस्त कऽ देलकन्हि । ओ जीवन मे ज्ञान क एक केन्द्र सँ दोसर केन्द्र धरि निरंतर यात्रा करैत रहलाह । एक मतवाद सँ दोसर मतवाद धरि, हुनकर अशांत आत्मा, मनुक्खक भौतिक दुःख सँ मुक्ति क लेल, निरंतर प्रयत्न करैत रहलन्हि जे कोनो मार्ग भेटय ।

१९०३ मे, जखन ओ दसो वरख क नहि भेल छलाह, घर सँ चुपचाप पड़ा वनारस पहुंचलाह । १९०७ आ १९०९ मे काज तकैत आत्मनिर्भर वनवाक हेतु कलकत्ता पहुंचलाह । हिमालय हुनक गंतव्य छलन्हि । १९१० सँ ओ अपन नियमित यात्रा प्रारम्भ कयलन्हि,पहिने साधु सभक एक टा झुंड क संग आ बाद मे एकसरे । ओ सम्पूर्ण भारत क भ्रमण कयलन्हि, अगिला एगाहर साल धरि छोट-पैघ अनेको शहर मे भटकैत रहलाह जेना काशी, परसा, तिरुमिशी, तिरुपति, कांचीपुर, बंगलोर, विजयनगर, त्रयंबक, उज्जैन, अहमदावाद, अयोध्या, आगरा, लाहौर, कुर्ग इत्यादि । १९२६ मे ओ पुनः हिमालय घुमि अयलाहः तिब्बत, बुशहर राज, सुमनाम, कानाम, स्पीति एहन दूरस्थ स्थान धरि होइत ।

१९२३ मे राहुल क विदेश यात्रा सभ प्रारंभ भेलन्हि । हुनकर पहिल यात्रा नेपाल क छलन्हि । १९२७ मे ओ श्रीलंका गेलाह । १९३० मे ओ अपन नाम ''रामउदार दास'' सँ बदलि के नियमित वौद्ध नाम राहुल सांकृत्यायन रखलन्हि जे अंत धरि हुनक संग रहल । ओ चारि बेर तिब्बत गेलाह । अपन यात्रा वृत्तांत मे ओ एहि यात्रा सबके सब

सँ कटिन खतरनाक, आ तैयो सब सँ बेशी संतोषप्रद आ सार्थक पओने छथि । १९३२ मे ओ यूरोप गेलाह जाहि मे ओ फ्रांस, जर्मनी आ इंग्लैंड क जीवन के लग स देखलन्हिं । सोवियत रूस मे ओ लेलिनग्राद विश्वविद्यालय मे अध्यापन कार्य कयलन्हिं । वाद मे ओ एकटा वृहदाकार ग्रंथ ''मध्य एशिया का इतिहास'' दू खंड मे लिखलन्हि आ १९५८ मे हिन्दी क साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कयलन्हि । राहुल मध्यपूर्व आ सुदूरपूर्व क अनेक यात्रा कयलन्हि । ओ जापान, कोरिया, ईरान आ चीन गेलाह । १९०७ सँ अंत धरि, १९६३ धरि एक अंतहीन यात्रा क कथा छन्हि हुनक जीवन । ओ एहि यात्रामयताक दर्शन वनौलनि आ एकटा पोथी लिखलनि—''घुमक्कड़ शास्त्र'' । ओ प्राय: एको-दू वरख व्यवस्थित विवाहित दांपत्य जीवन नहि वितौने हेताह । पहिने ओ लेनिनग्राद मे लोला (एलेन स्मेर्तोलना सांकृत्यायनी) नाम क मंगोल विदुषी स विवाह कयलन्हि जाहि सँ हुनका एकटा पुत्र छलन्हि इगोर । स्तालिन क शासन मे, ने तमाय के आ ने बेटा के भारत आवि राहुल क संग रहबाक अनुमति भेटलैक । वाद मे आ एक टा भारतीय नेपाली महिला डा. कमला सांकृत्यायन (पूर्व नाम कमला पेरियार) सँ विवाह कयलनि आ अपन वैवाहिक जीवन क कएक वरख मसूरी मे वितौलनि । मुदा पुत्री जया आ पुत्र जेता क जन्म क वाद हुनका पुन: श्रीलंका क विद्यालंकार विश्वविद्यालय मे बौद्ध दर्शन क प्राध्यापक क रूप मे वजाओल गेलन्हि । ओतए ओ भीषण दु:खित पड़ि गेलाह । मधुमेह, ऊंच रक्तचाप आ हृदय विकार हुनकर अतिश्रांत स्वास्थ्य पर वहुत बेशी प्रहार कएलकन्हिं, आ जेना पूर्व मे उल्लेख कएल गेल अछि, जीवन क अंतिम दू वरख मे हुनकर स्मृति समाप्त भऽ गेल छलन्हि आ दार्जिलिंग मे १९६३ मे हुनक देहावसान भऽ गेलनि । जतए हुनक अंतिम संस्कार भेल छलन्हिं, ओतए एक टा छोट सन राहुल स्मृति वनल छैक ।

प्राइमरी पाठशाला मे जखन ओ उर्दू सीखि रहल छलाह, तखन नवाजिंदा वाजिंदा क खिस्सा ''खुदराई का नतीजा'' मे ओ जे एक टा शेर नेनपन मे पढ़ने छलाह, से हुनकर कल्पना शक्ति के प्रेरित करैत रहलन्हि । अपन आत्मकथा मे एहि शेर के ओ कतेको वेरि उद्धृत एकने छथि :

''सैर कर दुनिया की गाफ़िल जिन्दगानी फिर कहां,
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहां''

तैं हुनकर जीवन क आदर्श वाक्य वनल—एक ठाम स्थिर भए जुनि रहू, सदिखन घुमैत रहू । येह ''चरै वेति । चरैवेति !!'' क मंत्र राहुल क व्यक्तित्व के बरोवरि कोचैत रहलन्हि—ओ गृहस्थी क एकरस आ आत्म-तुष्ट जीवन मे कखनहु वन्हि कऽ नहि रहि सकलाह । ओ सदैव गतिशील रहलाह, एक स्थान सँ दोसर स्थान धरि, एक भूखण्ड सँ दोसर भूखण्ड धरि, एक भाषा सँ दोसर भाषा धरि, मानवी जिज्ञासा क एक ज्ञान क्षेत्र सँ दोसर क्षेत्र धरि । ओ कखनो संग्रह करवाक आ एक्के स्थान पर निश्चल रहवाक विरोधी छलाह । हुनका लेल ज्ञान क अन्वेषण एक टा अनन्त तृष्णा छलन्हि ।

एक वेर १९४८ मे, इलाहाबाद मे, हिन्दी साहित्य् सम्मेलन भवन मे वर्तमान लेखक, जखन राहुल क संग १६००० शब्दक एक टा ''अंग्रेजी-हिन्दी'' शासन-शब्द कोश क संपादन क काज करैत छलाह, क्यो एक गोटे राहुल क जल्दिवाजी आ तकर परिणाम स्वरूप काज क आधा रहि जैवाक आलोचना कयलनि । एहि सज्जन क पूर्णता संबंधी उपदेश के धैर्यपूर्वक सुनि राहुल मुस्कियेलाह आ अपन खास अंदाज मे हुनका जवाव देलखीन्ह—''वुद्ध कहि गेल छथि: ''सव्वम खनिकम्'' (सव किछु क्षणिक थीक) । कोनो वस्तु स्थिर नहि होइत छैक । लेनिन सेहो कहने छथि—''किछुओ अंतिम नहि छैक'' । हम ई नहि मानैत छी जे कोनो मनुक्ख सम्पूर्ण छैक । हम कोनो सत्य पर एकाधिकार क दावा नहिं करैत छी । हम अपन काज करैत छी । भावी पीढ़ी आओत आ हमर काज क सुधार करत । ई अविस्मरणीय शब्द स्मरण दियवैत अछि जे राहुल सर्वदा अपन सीमा क ध्यान रखैत छलाह ।

जीवन

राहुल क जन्म नाम छलनि केदारनाथ पांडे आ जन्मदिन ९ अप्रैल, १८९३ । हुनक पिता गोवर्धन पांडे धार्मिक विचार वाला गरीव गृहस्थ छलाह । माय कुलवंती, अपन माय-वापक संग पंदहा गाम मे रहैत छलथिन्ह जतए केदार क जन्म भेलन्हि । जैं कि हिनक मायक देहान्त अट्ठाइस वरख क अवस्था मे आ पिता क पेतालीस वरख मे भऽ गेल छलन्हि, हिनकर लालन-पालन स्नेहमयी नानी कएलथीन्ह । १८९७ क भयानक अकालक स्मृति हुनक वाल्यावस्था क प्रथम स्मृतिक रूप में अंकित छलन्हि ।

नवम्वर, १८९८ मे हुनका प्राथमिक विद्यालय मे पठाओल गेलन्हि जकरा मदरसा कहैत छैक । ओतए हुनकर प्राथमिक शिक्षा उर्दू वर्णमाला क परिचय सँ प्रारम्भ भेलन्हि । ओ स्वीकार कयने छथि जे खेलऽ-धूपऽ मे वेशी नीक नहि छलाह । हुनकर स्कूल क सहपाठी मे सैयद आ शिया मुसलमान अधिक रहन्हि । रानीसराय क लोअर प्राइमरी स्कूल मे विद्यार्थी सव के निर्दयता पूर्वक पीटऽ वाला एकटा मास्टर वावू पत्तर सिंह क हुनका स्मरण छलन्हि । राहुल अपन आत्मकथा क पहिल खंड क परिशिष्ट नं०२ मे, पचास पृष्ठ धरि, वैदिक काल सँ अपन गोत्र आ वंश क क्रमवद्ध विवरण दैत छथि, जे हुनकर झक्की पितामह रामशरण पाठक धरि आवि कए समाप्त होइत छैक । ओ अपन पिता क संवंध मे सेहो परिहास क संग लिखने छथि जे कोना पिता अपन घुमक्कड़ वेटा के ताकि-ताकि अैनत छलाह । राहुल क माय आ एकमात्र वहिनकि देहावसान हुनक वाल्यावस्था मे भऽ गेल छलनिह । नेनपने मे राहुल क विवाह भऽ गेल छलन्हि मुदा ओ अपन पहिल पत्नी के कहियो नहि देखलन्हि । ओ एक वेर जखन नवे वरख क छलाह त वनारस जयवा क लेल अपन घर छोड़ि देलनि आ दोसर वेर कलकत्ता जयवाक लेल जखन ओ चौदह वरक्खक छलाह घर सँ हुनकर भागवाक कारण स्पष्ट नहिं छैक । ओ लिखने छथि जे विशाल विश्व के देखबा का इच्छा आ आओर ज्ञान प्राप्त करबाक इच्छा मूल कारण छलन्हि । मुदा, कलकत्ता एहन महानगर मे हेरायल आ हतोत्साह भेल राहुल अपन गाम धुमि अयलाह । १९०९ ईस्वी मे सोलह वरखक अवस्था मे ओ फेर कलकत्ता चलि गेलाह आ एकटा तमाकुल क दोकान मे काज करए लगलाह । एतय ओ किछु निसाक चीज मिलाओल मधुर खाऽ लेलनि आ बेहोश भऽ गेलाह । आ हुनका मेडिकल कॉलेज क अस्पताल मे भर्ती करऽ पड़लन्हि ।

१९१० मे तरुण राहुल के यायावरी आकृष्ट कएलकन्हि आ सफल हेबाक लेल

व्यवस्थित डिग्री सब आ नौकरी पावि दुनियादार बनबाक इच्छा हुनका घेरि लेलकन्हि । ओ अंतर्मुखी आ संवेदनशील छलाह । हुनक पहिल इच्छा छलन्हि मूल संस्कृत मे वेदांत क अध्ययन करबाक । एहि बेर साधु सभाक संग जयबा लय जखन ओ गृहत्याग कयलन्हि त हुनका काज करबाक, कमयबाक व्यस्थित जीवन जीबाक आ जीवन क आनन्द उठएबा क कोनो इच्छा नहि छलन्हि ।

हुनकर मोन आ आत्मा पर विरक्ति आ जीवन जगत क प्रति निर्मोह पूर्ण रूपेण व्याप्त भऽ गेल छलन्हि । हुनका लग सांसारिक वस्तु कम छलन्हि आ हुनकर आकांक्षा बेसी आध्यात्मिक भऽ चुकल छलन्हि । साधु सभक संपर्क हुनका रूढ़िवादिता आ अंधभक्ति क कटु आलोचक बना देने छलन्हि । ओ अंततः, पूर्ण नास्तिक आ कट्टर भौतिकवादी भऽ गेल छलाह मुदा हुनक ई दार्शनिक यात्रा काफी दीर्घ आ कष्टदायक छलन्हि ।

आरम्भ मे हुनका रंधनक ज्ञान नहि छलन्हि आ तैं भिक्षा पर निर्वाह करऽ पड़ैत छलन्हि । पयरे चलि क ओ अयोध्या आ मुरादाबाद धरि पहुंचि गेलाह । बिना टिकट नेने ओ हरिद्वार धरि-चलि गेलाह । हिमालय क प्रति हुनक मोन मे प्रबल आकर्षण छलन्हि । हरिद्वार जा कए ओ अपन स्कूल क संगी योगेश कें एक तरह क गुप्त भाषा मे गद्यकाव्य जकाँ पोस्टकार्ड लिखलन्हि । ओ देवप्रयाग आ ऋषिकेश गेलाह आ कठिन पर्वत मार्ग सँ बद्री-केदार, यमुनोत्री आ गंगोत्री धरि गेलाह ।

घुमक्कड़ साधु सभक संग ओ गांजा क चिलमक सेवन करैत छलाह मुदा कखनहुं व्यसनाधीन नहिं भेलाह । वैह राहुल जे अपन "वैज्ञानिक भौतिकवाद" मे महात्मा गांधी के पूंजीपति सभक एजेंट आ "गांधी, थारा वेट्टा जीवे" एहन कटु बात सब लिखने छलथीन्ह, ३० जनवरी १९४८ के ई सप्पत खपलन्हि जे आब सिगरेट नहि छुइताह आ ओहि प्रतिज्ञा के अंत धरि निभोलनि । ओ मांसाहार पसिन्न करैत छलाह मुदा शराब क एको बुन्न कहियो नहि पीलन्हि । ओ विलक्षण दृढ़ संकल्प-शक्तिक व्यक्ति छलाह ।

सत्रह बरख क बएस मे हिमालय क संक्षिप्त यात्रा हुनका पर बहुत बेशी गहीड़ असरि कएलकन्हि । हुनकर आत्मा के जेना कोनो जादू सँ क्यों अपना दिस बजाऽ हिमालय क आगां वर्जित प्रवेश मे जएबा क लेल प्रेरित करैत छल । ओ बनारस लौटि अयलाह आ चक्रपाणि ब्रह्मचारीक मठ मे रहए लगलाह । एक बेरि ओ पैरे बनारस सँ चुनार, मिर्जापुर, आ इलाहाबाद गेलाह । बनारस मे रहि कए ओ कतेको काव्येतिहास, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष आदि अनेक विषय सब पर संस्कृत मे ग्रंथ पढ़लन्हि । कतेको तरह क कठिन सिद्धि प्राप्त करबा क लेल जप-तप आ आन मार्ग सँ कतेको देवी-देवता सभक आर्शीवाद प्राप्त करबा क सेहो प्रयत्न ओ केलनि ।

उनैस बरख क बएस मे हुनका मे पहिल बुद्धिवादी ज्ञान क पिपासा जागृत भेलन्हि जखन ओ पं. रामअवतार शर्मा क भाषण सुलनि । पं. शर्मा प्रकाण्ड विद्वान छलाह तथापि ने त वेद मे आस्था रखैत छलाह आ ने ईश्वर मे । सातम कक्षा मे दयानन्द स्कूल

मे राहुल क नाम लिखा देल गेलन्हि जतए ओ अंग्रेजी आ गणित सीखऽ लगलाह । मुदा विधिवत शिक्षा हुनकर भाग्य मे नहि छलन्हि । आ राहुल पारस मठ मे जा कए नियमित साधू भऽ गेलाह आ हुनक नाम बदलि कए राखन गेलनि राम उदार दास । एतए मंदिर क देवता सभक यांत्रिक पूजन आ विधि-विधान क मंत्र-तंत्र क दैनिक नियमित पुनरावृति मे भरल आराम क जीवन सँ ओ ऊबि गेल छलाह । यद्यपि ओ चाहितथि त परसा मठ क अगिला गद्दी हुनका भेटि सकैत छलन्हि आ ओ सहजे मठाधीस भऽ सकैत छलाह ओ हिन्दी मासिक ''सरस्वती'' आ अंग्रेजी मे छपल ''डॉन'' पढ़नाई शुरू कएलनि । ओ संस्कृत आ हिन्दी क किछु पोथी सेहो किनलनि ।

मठ मे आगाँ पढ़वाक कोनो व्यवस्था नहि छलैक, तैं राहुल किछु मास क हेतु अपन गाम कनैला पहुँचलाह । मुदा अपना के शिक्षित बनयबाक आकांक्षा प्रबल छलन्हि । गाम मे एहन शिक्षा क कोनो अवसर अथवा सुविधा नहि छलैक । बीस बरखक बएस मे राहुल फेर घुरि कए परसा मठ चलि गेलाह । अनेको बोली आ भाषा सब मे आ सांस्कृतिक मानव-विज्ञान मे रुचि हुनक व्यसन बनि गेलनि । भोजपुरी आ मल्ली उच्चारण विन्यास क बनारसी हिन्दी बोली मे अलग-अलग उच्चार-पद्धति सभक उल्लेख ओ कयने छथि । ओ विभिन्न जातिक महिला लोकनिक द्वारा मनाओल जाएवाला अनेक पारंपरिक रीति आ रेवाजक उल्लेख सेहो विस्तारपूर्वक कएने छथि ।

बौद्धिक दृष्टि सँ त रसिक राहुल जुलाई १९१३ मे परसा सँ पड़ा गेलाह आ रेल सँ हाजीपुर चलि गेलाह । बिना टिकट आसनसोल, आद्रा आ खड़गपुर क यात्रा कए राहुल पुरी पहुँचलाह । एहि तीर्थस्थान क यात्रा क बाद राहुल मद्रास पहुँचलाह । साधु क रूप मे ओ ''सत्रम्'' अथवा धर्मशाला मे विश्राम कयलन्हि । ओ तिरूमलै धरिक पदयात्रा कयलनि आ ओतए एक टा ''उत्तरार्थी-मठम्'' मे ठहरलाह । ओ तमिल सीखऽ लगलाह । ओ पुन्नमलै, पच्छपेरूपाल, तिरूमिथि आ तिन्नूर सेहो गेलाह । दक्षिण क संपूर्ण तीर्थस्थले क यात्रा ओ साधु क रूप मे कयलन्हि । ओ तिरूपति, तिरूकलिकुंड्रम, कांचीपुरम आ रामेश्वरम सेहो गेलाह ।

अपन आत्मकथा मे ओ विस्तार स रामनाड, बंगलौर, विजयनगर, बागलकोट, पंढरपुर, पुणे, बंबई, नासिक, त्रयंबक, कपिलधारा, ओंकारमांधाता आ उज्जैन क अपन यात्रा क वर्णन कएने छथि । उज्जैन मे ओ कुम्भ मेला देखलन्हि आ पैघ-पैघ साधु सभक झगड़ा देखि खिन्न भऽ गेल छलाह । ओ डाकोर, अहमदाबाद जा कए पुनः १९१४ मे परसा मठ घूमि अयलाह । मठ क प्रशासन आ संपत्तिक सब टा कागज-पत्र क देख-रेख करबा मे हुनकर मोन नहि लगैत छलन्हि । एस. गांगुली आ पिंडीदास नामक दू टा फोटोग्राफर भारतीय पुरातत्व विभाग सँ ओहिठाम मठ मे अयलाह । राहुल फोटोग्राफी दिस बेस आकृष्ट भेलाह आ बाद मे जा कए ओ हुनकर सौख बनि गेलन्हि । मठ क जीवन हुनका बड्ड दमघोटू लगैत छलन्हि । तैं राहुल चुपचाप मठ छोड़ि देलन्हि आ अयोध्या चलि गेलाह । ओतऽ ओ आर्यसमाजी प्रचारक क प्रभाव मे अयलाह आ एक

टा व्याख्यान आ वाद-विवाद सभाक सभारम्भ कएलनि । अयोध्या आ फैजाबाद क बीच मे एक टा देवी काली मंदिर मे खस्सी बलिप्रदान करऽ वाला एक टा ब्रह्मचारी क विरोध मे राहुल एक टा सभा संगठित कएलन्हि आ सनातनी पुरोहित लोकनि द्वारा मारल-पीटल गेलाह । पुलिस के नालिस कएल गेलैक । मुदा आब राहुल आर्यसमाजी, मूर्ति पूजा विरोधी आ नास्तिक क रूप मे प्रसिद्ध आ बदनाम भऽ गेल छलाह ।

१९१५ सँ १९२२ धरि राहुल अपन जीवन के "नव प्रकाश" क कालखंड क रूप मे परिभाषित करैत छथि । दादा क देहांत भऽ चुकल छलन्हि आ पिता के आबहु एहन विश्वास छलन्हि जे ओ एक टा नीक गृहस्थ बनताह आ व्यवस्थित स्थायी जीवन बितौताह । मुदा राहुल त विद्रोही छलाहे । ओ जानि बूझि कय राजपूत आ मुसलमान सभक घर मे जा जा कए माछ बनबैत छलाह आ खाइत छलाह । ओ आर्यसमाज क सेहो कएक टा ग्रंथ पढ़लन्हि । जनवरी १९१५ मे ओ आगरा पहुँचलाह आ आर्य मोसाफिर विद्यालय मे भरती भऽ गेलाह । दू बरख धरि ओ संस्कृत, अरबी, कतेको धर्म सभक धर्मशास्त्र आ राष्ट्रीय इतिहास पढ़ैत रहलाह । ई अनुशासनपूर्ण जीवन हुनका मे सरल जीवन क लेल प्रेम उत्पन्न कएलकन्हि आ एक तरह क अस्पष्ट राष्ट्रीय चेतना सेहो जगोलकन्हि, जे कएक तरह क समाचार पत्र पढ़ला स उत्पन्न भेलन्हि । १९१५ मे "मुसाफिर" आगरा मे केदारनाथ विद्यार्थी उर्दू में लेख लिखय लगलाह । मेरठ सँ छपऽ वाला "भास्कर" मे राहुल अपन पहिल पैघ हिंदी लेख प्रकाशित करौलनि । ओ ओहि सब ढोंगी साधु सभक विरोधी छलाह, जे गृहस्थ सब के ठकैत छलथीन्ह ।

आब ओ खूब पढ़नाई प्रारंभ कयलन्हि । सनातन हिंदू धर्म क विरोध मे आर्य समाजी लोकनिक पोथी, ईसाई मिशनरी लोकनि क पोथी जाहि मे इस्लाम क आलोचना छलैक, खंडन-मंडनात्मक तार्किक शास्त्रार्थ वाला गद्य, मौलवी सनाउल्लाह क "अहलेहदीस" और अनेक कादियानी पत्र-पत्रिका हुनक प्रथम वाचन क विषय छलन्हि । वैष्णव धर्म सँ उदासी वैरागी, आ ओहि साधु समाज सँ आर्यसमाज धरि पहुँचब, जाहि मे जाति पांति क भेद क आलोचना छल ई सब बुद्धिवाद दिस हुनक प्रगतिशील मानसिक यात्रा छलन्हि । १९१५ मे जबलपुर मे भेल एक टा सार्वजनिक शास्त्रार्थ दऽ ओ लिखैत छथि, जे मौलवी आ आर्यसमाजी पंडित लोकनि क बीच भेल छल आ जाहि मे दू दिन धरि धर्म-शास्त्र सभक उद्धरण दऽ-दऽ आलोचना भेलज्छल । हुनका ई भार देल गेलन्हि जे ओ कुरआन के देवनागरी मे लीखथि आ ओकर हिंदी अनुवाद करथि । मुदा ताहि हेतु जे पारिश्रमिक देल जाइत छलन्हि ओ बड्ड कम छलैक । तैं ओ ई काज छोड़ि देलन्हि । जखन ओ आगरा मे विद्यार्थी छलाह, तखनहिं "कोमागाटामारू" क घटना घटल चल, जाहि मे बहादुर सिक्ख सब, अंग्रेजी साम्राज्यवाद क खिलाफ लड़ैत शहीद भेल छलाह । तरूण क्रांतिकारी लोकनिक मोन के ई सब टा घटना आंदोलित कऽ रहल छल ।

१९१६ मे राहुल संस्कृत अध्ययन के आगाँ बढ़एबाक निश्चय कएलन्हि आ ओ

लाहौर गेलाह । पंजाबी भाषा आ स्त्री सब सँ हुनक पहिल सामना बड्ड रोचक छलन्हि । कोटा मे एक पंजाबी ग्राम्य तरूणी सँ भेट भेला पर हुनका "गाथा-सप्तशती" मोन पड़लनि । ओ दिल्ली आ हरियाणा होइत लाहौर पहुंचलाह । लाहौर ताहि दिन मे आर्य समाज क आंदोलन क गढ़ छलैक । स्वतंत्र चिंतन हुनका आकृष्ट कएलकन्हि ओ मठवासी साधु लोकनि क संग छोड़ि देलन्हि । आब हुनका आर्यसमाज सेहो अनेक दृष्टि सँ सिद्धांत-बद्ध एक टा बंद गली जकाँ लागऽ लगलन्हि । ओ इटावा, कानपुर, लखनऊ क अनेको आर्यसमाज कार्यालय मे गेलाह । मुदा एहि "आर्य मोसाफिर के क्यों स्वीकार नहि कएलक । रायबरेली मे हिंदी भाषा आ साहित्य पर ओ एकटा सहजस्फूर्त्त भाषण देलनि । बनारस मे सेहो व्याख्यान देलनि । अहरोरा मे राहुल क पिता फेर हुनका सँ प्रार्थना करऽ अएलथिन्ह जे चलू अपन गाम आ अपन जमीन दिसि लौटि चलू । मुदा राहुल जाहि जीवन के एक बेर छोड़ि देलन्हि ओकरा अपनौनाई पुनः अस्वीकार कएलन्हि । ताहि दिन ओ अपन पत्र-व्यवहार संस्कृते मे करैत छलाह । एतऽ धरि जे १९२२ मे, १३ फरवरी सँ १९ अगस्त धरि बक्सर जेल मे लिखल गेल हुनक डायरी संस्कृते मे छलन्हि । कतौ-कतौ ओ संस्कृत, अरबी, उर्दू आ हिन्दी मे पद्य-रचना सेहो कयलन्हि अछि । अहरोरा सँ फेर ओ पड़ा जैबा क प्रयास कएलन्हि । हुनक शोक संतप्त पिता हुनका संग बनारस धरि अएलथीन्ह आ राहुल क मोन बदलबा क बहुत प्रयास करैत रहलथीन्ह । मुदा हुनका जऽस नहि भेटलन्हि । ई राहुल क अपन पिता क संग अंतिम भेंट छलन्हि । आब क एक वर्ष धरि राहुल क अपन कोनो घर वा डेरा नहि छलन्हि । राहुल निश्चय कएलन्हि जे अपन जन्म-जनपद आजमगढ़ पचास वर्ष क आयु सँ पूर्व ओ नहि घुरताह । आ ओ अपन निश्चय पर अटल रहलाह ।

१९१८ में उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी समाचार पत्र सब में राहुल रूसी राज्य-क्रान्ति क समाचार पढ़लन्हि । ओ एक टा "नव्य अतलांतिस" अथवा आदर्श साम्यवादी समाज क संकल्पना वा दिवा-स्वप्न देखऽ लगलाह । १९२२ में संस्कृत मे ओ एकर एकटा प्रारूप सेहो लिखलन्हि । १९२३-२४ में हजारीबाग जेल में रहैत काल ओ अपन राजनैतिक आदर्शवादी स्वप्न के आकार दैत "बाईसवीं सदी" नामक पोथी लिखलनि । अप्रैल-मई १९१९ मे लाहौर मे फौजी राज क आतंक देखि कऽ राहुल क प्रथम राजनैतिक अनुभव शुरू भेलनि । एतऽ हुनका एकटा चुनौती देखबा मे अयलनि, जकर मुकाबिला करबा क लेल हुनकर संस्कृत शास्त्र सभक ज्ञान, चाहे ओ मठ क हो वा आर्यसमाज-भवन सभ क हो, उपयोगी नहि छलन्हि । ब्रिटिश राज क विरोध मे ओ "डायर-शाही क कारी दिन सब टा एक नब घृणा क धधरा पसारि देने छलैक । राहुल लिखने छथि "कतेको भारतीय सभक मुंह नाङट भऽ रहल छलन्हि" । तखनहि अपन सशक्त ध्यान-धारणाक हेतु ओ संस्कृतक शास्त्री परीक्षा मे पास नहि भऽ सकलाह । पुनः राहुल चित्रकूट गेलाह । ओतऽ काशी न्याय-मध्यमा परीक्षा देलनि । ओहू मे ओ अनुत्तीर्ण भऽ

गेलाह । कलकत्ता क मीमांसा परीक्षा में ओ प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह । ई परीक्षा ओ जबलपुर मे देने छलाह ।

राहुल के घुमक्कड़ी क बीमारी फेर तंग क रहल छलन्हि । १९२० मे सत्ताईस वरख क आयु मे, करबी सँ बिना टिकट रेल से चलि, बनारस मे जाऽ कऽ दु:खित पड़ि गेलाह । पहिल बेरि सारनाथ पहुँचलाह । गोरखपुर सँ ओ कसिया गेलाह, बुद्ध क परिनिर्वाण क स्थान देखलन्हि । अपन आत्मकथा मे ओ एहि बौद्ध स्थान सभक तीर्थयात्रा क वर्णन अत्यंत काव्यमय भाषा मे कयने छथि । गोरखपुर सँ ओ नेपाल गेलाह । ओ लुंबिनी आ कपिलवस्तु सभक यात्रा कएलन्हि । निगलिहरा क पोखरि लगक टूटल अशोक कालीन शिलालेख सब हुनका आकर्षित कयलकन्हि । ओ भोट देश मे जयबा क अपन इच्छा व्यक्त कयलन्हि, और एकटा नेपाली महंथ हुनका अपन मठ क उत्तराधिकारी बनयबाक लेल तैयार छल जकरा ओ मना कऽ देलथीन्ह । ओ व्यंग्य सँ एहि मठाधीश सभक गांजा पीबऽ वाली स्वैरिणी योगिनी सभक संग संबंध क उल्लेख कएने छथि ।

राहुल क जीवन यात्रा क सब सँ मनोरंजक, खतरनाक आ साहसपूर्ण अंश—हुनक तिब्बत यात्रा सभक वर्णित करबा सँ पूर्व हुनक राजनैतिक विचार-यात्रा संक्षेप मे देल जायब उचित हैत । ओ एहि समय के "राजनीति में प्रवेश (१९२१-२७)" कहैत छथि । ओ १९२१ मे असहयोग आंदोलन मे खंडबा मे देल गेल पहिल राजनैतिक भाषण के मोन पाड़ैत छथि । सलेमपुर मे भगवा कपड़ा पहिरनहि साधु जकाँ जिला कांग्रेस कमिटी क ऑफिस मे गेलाह आ परसा सँ काज प्रारंभ करबा क चर्च ओ कएलन्हि । ओ परिहास सँ लिखैत छथि जे जखन हुनकर अंधविश्वासी चेला सब गुरू सभक सामने बलिक मुर्गा-बकरा, गांजा आ शराब चढ़ौनाई नहि छोड़लक, त एक दिन राहुल एहन अभिनय कयलनि जे हुनकर भीतर गांधी नामक एक टा नब देवता जागृत भऽ गेलनि आ ओ चिचिऔलाह—"आब सब देवता गांधी बाबा क संग छथि । जे बयो बलि-पशु शराब, गांजा चढ़ाओत ओ सब नष्ट भऽ जाएत । हम ओकरा श्राप देत छियैक ।" एकर बड़ नीक परिणाम भेलैक । राहुल साधु छलाह आओर छपरा क बाढ़ि पीड़ित दीन-दुखी लोकनि क सेवा मे लागि गेलाह । ओहि जमाना मे समाज-सेवा आ राष्ट्रीय आन्दोलन दू अलग-अलग कार्य क्षेत्र नहि छल । एकमा मे गांधी स्कूल क केन्द्र सँ ओ लोक सब मे चरखा बँटलन्हि । विदेशी राज क विरोध मे असंतोष पसारय वाला कतेको भाषण ओ भोजपुरी मे देलनि । जनवरी ३१, १९२२ में ओ पकड़ल गेलाह । जेल मे कतहु सँ गुप्त ढंग सँ ट्राटस्की क पोथी "बोल्शेविज़्म आ विश्व-क्रांति" हुनका भेटि गेलन्हि आ अपन जेल क संगी सभके ओकरा जोर-जोर सँ गावि-गावि क सुनौलन्हि—"श्रणु-श्रणु रे पांथ, अहमिव नद्यै काकी" (सुनू, सुनू हे पथिक हम एसकर नहिं छी ।)"

अपन राजनैतिक अपराध स्वीकार कएला पर राहुल के छः महीना क कारावास क दंड गेल गेलन्हि । राहुल कहलन्हि ''धन्यवाद'' । हुनकर हाथ मे लोहा क सिक्कड़ पहिराओल गेल छलन्हि । ओ लिखने छथि, ''जखन दादा हाथ मे चावी क कड़ा पहिरौने छलाह, तखनहुं ओ वेड़िये जकाँ छल, फरक मात्र छल जे जखन हाथ कड़ा सँ जकड़ि जाइत छैक, तव काज ओतवय कुशलता से नहि भऽ पवैछ । ''वक्सर जेल मे ओ छः महीना वितौलनि । ओतय व्रजभाषा मे समस्यापूर्ति सव सेहो कएलन्हि ''फाइल'' आ ''काला शब्द पर । भारतेंदु हरिश्चंद्र क नाटक ''अंधेर नगरी'' ओ जखन जेल मे छलाह तखनहिं मंचित कएलन्हि । जेलहि मे राहुल संस्कृत मे कुरआन क अनुवाद प्रारंभ कएलन्हि । जेल क संगी लोकनि के ओ उपनिषद् आ वेदांत पढ़ायव शुरू कएलन्हि । जेल क भीतर क समाचार चुपचाप जेल सँ वाहर पठाओल जाइत छलैक, जे मजहरूल हक क ''मदरलैंड'' मे छपैत छल ।

२९ अक्टूवर १९२२ के राहुल जिला कांग्रेस क सचिव चुनल गेलाह । कांग्रेस क गया अधिवेशन मे राजाजी के डिप्टी महात्मा कहल गेलन्हि । किएक तऽ हुनकर दल दृढ़ अपरिवर्तन-वादी छल, दोसर दल क नेता छलाह स्वराज पार्टी क नेता मोतीलाल नेहरू, विट्ठल भाई पटेल आ देशवंधु चित्तरंजन दास । राहुल धीरे धीरे साम्यवाद क क्रांतिकारी विचारधारा क दिसि जा रहल छलाह ओ पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष वनि गेल छलाह आ नास्तिक सेहो । गया कांग्रेस मे राहुल राष्ट्रीय नेता लोकनि सँ अपील कयलन्हि जे वोधगया क हिंदु मंदिर वौद्ध सब के दऽ देल जाइन्ह । १९२३ क मार्च अप्रैल मे राहुल डेढ़ मास नेपाल मे वितौलन्हि । मात्र शिवरात्रि क दिन पशुपतिनाथ क दर्शन क लेल ताहि दिन हिंदू लोकनि कें नेपाल जाए देल जाइत छल । एतय ओ कतेको वौद्ध विद्वान सव, मंगोल आ ''चिनिया लामा'' सब सँ भेंट कएलन्हि ।

नेपाल सं लौटि कऽ अवितहि राहुल के फेर सरकार पकड़ि लेलकन्हि आ वांकीपुर जेल मे असकर कोठरी मे पठा देलकन्हि । ओतऽ सँ ओ हजारीवाग जेल पठा देल गेलाए जतए ओ दू वरख सलाख क पाछां रहलाह । हुनका लग ''सिंहली लिपि'' मे, एक टा पालि 'मज्झिम' निकाय छलन्हि, जे ओ नित्य पढ़ैत छलाह । नित्यपाठ क पोथी पुलिस सँ प्राप्त करवाक लेल ओ दू दिन उपवास करैत रहलाह । ता कैदी सव के कोनो कागज, पेंसिल, कलम संग मे रखनाई मनाही छल । ओ कोनहुना एक टा स्लेट पटिया प्राप्त कएकन्हिं आ ओही जेल मे केरल क एक टा शंकराचार्य छल, ओकर मददि सँ अपन गणित, वीजगणित, रेखागणित, ''आप्टिक्स'' आ ज्योतिप क ज्ञान फेर सं परिशोधित कयलन्हि । दयालु एंग्लो-इंडियन जेलर हुनका बच्चा सब वाला अंग्रेजी पोथी पढ़वा क लेल पठवन्हि । राहुल पैघ-पैघ आकाशीय मानचित्र वनौनाई प्रारंभ कएलन्हि । चारिटा अंग्रेजी उपन्यास (मुख्यतः रहस्य आ साहस भरल कथा सभक) ओ हिन्दी मे अनुवाद कएलन्हि । एही कालखंड मे ओ पुस्तक क सहायता सँ फ्रांसीसी आ अवेस्ता भाषा सब सीखलनि ।

ओ १९२६ मे मेरठ मे हरनामदास—वादमे जा कए ब्रह्मचारी विश्वनाथ आ तकर वाद भिक्षु आनंद कोसल्यापन नाम सँ परिचित—हुनका सँ भेट कयलन्हि आ ओ सब आजीवन घनिष्ट मित्र वनि गेलाह । राहुल काश्मीर गेलाह आ कारगिल सँ लद्दाख पहुँचलाह । जतए हेमिस क लामा "स्ताकसांग-रस-पा" सँ हुनकर भेट भेलन्हि । काल्पी मे ओ मोहिनी विद्या (मेस्मेरिज्म) सीखलन्हि आ किछु लामा सव पर ओकर प्रयोग कएलन्हि, मुख्यत: आत्म सूचन क द्वारा । ओ १८,०००फीट क ऊंचाई पर खारदोंगला धरि पहुँचलाह आ साठि वरख क वएस क रिझोंग लामा सँ भेट कएलन्हिं । ओ न्यूबा सँ लेह सेहो गेलाह । मान-पांग गोंग सरोवर होइत, घुमूर्ति— किन्नोर आ शिमला क मार्ग से ओ घुरलाह । १९२६ सँ, तिब्यत क सीमा पर ओहि मार्ग सं, राहुल क साहसपूर्ण यात्रा सव, जे मात्रा घुमन्तू लोक सव कऽ सकैत अछि, शुरू भेल । एहि यात्रा मे राहुल एक टा तिब्बती कुकुर क मृत्यु क बड्ड भावपूर्ण वर्णन करैत छथि, जेकर नाम "सेंग तुक" छलैक "हमर आंखि जे प्रिय माप-वाप आ स्नेहमय नाना-नानी क देहावसान पर सेहो नहिए भीजल छलैक, एहि कुकुर क मृत्यु पर नोर सं भरि आएल छल । हम कुकुर पर संस्कृत मे आठ श्लोक क शोकांजलि क रचना कएलहुं, प्रत्येक श्लोक क अंतिम पंक्ति छलैक "सेंग तुके । त्वत्प्रयाणे" ।"

पश्चिम तिब्यत क एहि पहिल झलक क वाद राहुल खुशहर रियासत, सुभनाम, कनाम, चिनी आ स्पिती होइत घुरि अएलाह । कोटद्वार मे ओ एक टा सेवक गाछी लगाव वाला श्री स्टोक्स से भेट कएलन्हिं आ शिमला लौटि अएलाह । तकर वाद ओ बिहार गेलाह आ सक्रिय राजनीति मे भाग लेवऽ लगलाह । किसान लोकनिक पैघ-पैघ सभा सब मे छपरा मे, राजेन्द्र प्रसाद क संग-संग, ओ भाषण देलन्हि । १९२६ मे ओ गौहाटी कांग्रेस मे भाग लेलनि । फरीदपुर मे ओ मजहरूल हक सँ भेट केलन्हि ओ हुनक वहुत पैघ आध्यात्मिक पोथी सभक लाइब्रेरी देखलन्हि । ३० मार्च, १९२७ के ओ अंतिम वेर परसा देखलन्हि आ प्रतिज्ञा कएलन्हि जे जमींदारी प्रथा क अंत भेने बिना ओ एतऽ नहि घुरताह ।

कलकत्ता क महावोधि सोसाइटी हुनकर सहायता कएलकन्हिं आ ओ श्रीलंका क विद्यांलकार परिवेण मे प्रवेश कएलन्हि । १६ मई, १९२७ सं दिसम्वर १९२८ धरि उन्नैस मास ओ ओतऽक बौद्ध ग्रंथ सव पढ़ैत रहलाह । ओतऽ ओ भारतीय सांस्कृतिक इतिहास क ज्ञान सेहो बढ़ौलन्हि । हजारीवाग जेल मे ओ ब्राह्मी लिपि क अध्ययन कएलन्हि आ "एपिग्राफिका इंडिया" पत्रिका क पुरान अंक सव पढलन्हि । श्रीलंका मे पालि टेक्स्ट सोसाइटी क प्रकाशन आ रॉयल एशियाटिक सोसाइटी क लंदन, बंवई, बंगाल आ श्रीलंका शाखा सव सँ प्रकाशित पत्रिका सब हुनक स्वाध्याय क विषय छलन्हि । प्रारंभ मे ओ अपन ब्राह्मण संस्कार सभक ईश्वर विश्वास क बौद्ध मत सं समन्वय करबाक यत्न कएलन्हि । मुदा ई सह अस्तित्व वेसी दिन धरि नहि टिक सकल । सर डी.वी. जयतिलके हुनका ओ सव पोथी पढ़ा देलथीन्ह जे हुनका चाहैत छलन्हि । दिसम्वर १९२७

मे, मद्रास मे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस क अधिवेशन क बाद राजेन्द्र प्रसाद श्रीलंका, गेलाह जतए राहुल हुनकर मार्गदर्शक छलथिन्ह । राहुल क लेखकीय रूप मे कार्यजीवन एतहि सं प्रारंभ होइत छन्हि । इलाहाबाद क हिन्दी मासिक ''सरस्वती'' मे श्रीलंका क विषय मे लेख लिखनाई आरंभ कएलन्हि । किछु स्थानीय विद्यार्थी सव के ओ संस्कृत पढ़बैत छलाह । एतऽ सिंहली आ फ्रांसिसी ओ और नीक जेकां सीखि गेलाह । तिव्वत जैवा क प्रवल इच्छा लऽ कए ओ भारत घुरलाह ।

राहुल चारि वेरि तिव्वत गेलाह—१९२९, १९३४, १९३६ आ १९३८ मे । जखन वख्तियार खिलजी नालंदा आ विक्रमशिला विद्यापीठ सभपर अपन हमलावर सेना क संग आक्रमण करलक, त ओतुका वौद्धभिक्षु हस्तलिखित पोथी सव के आ तालपत्र क ग्रंथ लऽक अपन जान वचयवा क लेल नेपाल, आसाम आ तिव्वत भागि गेलाह । जखन कोनो ग्रंथालय आ मठ नष्ट कएल गेल आ जरा देल गेलैक त भारतीय मूर्ति-विज्ञान, जे किछु मूर्ति सव मे आ भित्ति-चित्र सव मे, वचल छलैक, ओ किछु ताल पत्र क सचिव ग्रंथ सभक आ पवित्र धर्मग्रंथ सभक लकड़ीक पुस्तक पर अंकित रेखाचित्र क माध्यम तिव्वत धरि पहुंचल । ओ कला रेशमी टांड क गद्य माध्यम पर हस्तांतरित कएल गेलैक । भारतीय रेखा विन्यास क संग वीनी दृश्यांकन कला क समन्वय भेल, वज्रयान देवमाला आ स्थानीय लोक मिथक सभक अंकन मे ।

तालपत्र सभक ग्रंथ पोथी सव भारत सँ ईसा क सातम शताब्दी मे तिब्बत पहुँचल । तिव्वती सम्राट श्रांग-वत्सन साम्-पो (६३०-६९३) क राजदरबार मे एकर उल्लेख अछि । ई प्रक्रिया नवम शताब्दी धरि चलैत रहल । एहि काल खंड मे हजारक हजार संस्कृत आ पालिग्रंथ सव भोट भाषा मे अनुवादित भेल । एहि ग्रंथ सभ क ज्ञान सं मात्र वौद्ध धर्म आ दर्शन पर नव प्रकाश पड़ल से नहि, हिंदू वैदिक आ जैन परम्परा क विषय मे सेहो वहुत रास वात सभक पता चलैत अछि, किएक त कतेको ग्रंथ जकरा एतय कीड़ा द्वारा खायल गेल छलैक, ओ तिव्वत क लामा सव लग मे सुरक्षित अछि । असकरे ''कंजूर'' आ ''तंजूर'' मे एहन दस हजार भारतीय ग्रंथ सुरक्षित अछि । राहुल क चारि तिव्वत-यात्रा सव एहन वहुमूल्य सामग्री के भारत मे वापस अनवा मे वेस सहायता कएलक । राहुल पहिल वेर संस्कृत मे तिब्वती भाषा क व्याकरण आ प्राथमिक भाषा-पाठ लिखलनि । राहुल धर्मकीर्ति, सुवंधु आ असंग एहन वौद्ध नैयायिक लोकनिक ग्रंथ सभक पुनरूद्धार आ सुरक्षा मे सवस पैघ आरंभिक काज कयलनि । बाद मे प्रसिद्ध रूसी दार्शनिक, ''बौद्ध-न्याय शास्त्र'' क लेखक प्रो. श्चेर्वास्की लेनिनग्राद विश्वविद्यालय मे अपन स्मृति सव मे लिखलनि जे हुनकर बाद एहि विषय कें साधिकार पढ़ऽ वाला एके टा व्यक्ति संपूर्ण विश्व मे छथि आ ओ छथि राहुल सांकृत्यायन । बौद्ध विद्‌न क रूप मे हुनका सोवियत रूस मे बजाओल गेलनि । ओ लेनिनग्राद विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर बनलाह । जीवन क संध्याकाल मे श्रीलंका विद्यालंकार यूनिवर्सिटी मे ओ ससम्मान प्राध्यापक वना कऽ बजाओल गेलाह । मुदा भारत मे कोनो विश्वविद्यालय

मे हुनका पढ़यवाक ने अनुमति देल गेलनि आ ने हुनका आमंत्रित कएल गेलनि, किए त हुनका लग मे कोनो औपचारिक उपाधि नहि छलनि । हमरा सभक शिक्षा-पद्धति क नौकरशाही कतेक जकड़बंद छैक, एहि पर एहि सँ बेशी दु:खद टिप्पणी की भऽ सकैत अछि ।

१९२८ में तिब्वत मे गेनाई सरल नहि छल । नेपाल मार्ग सँ होइत गुप्त रूप सँ ओतय गेल जा सकैत छल । रक्सौल आ अमलेखगंज होइत ओ, शिवरात्रि क लाभ उठा, नपाल पहुँचलाह । एक टा खुजल लॉरी मे ओ काठमांडू पहुँचलाह । काठमांडू क महाबौद्ध स्तूप मे ओ डुक-पा लामा सँ भेट कयलन्हि । लद्दाख क हेमिस लामा सँ हुनका एक टा उत्तम अनुशंसा पत्र भेटि चुकल छलनि । एतय राहुल नेपाली बनि कऽ हुक पा लामा क शिष्य सभ मे सँ एक व्यक्ति बनि कए रहऽ लगलाह मुदा लामा एल्शोन गेवे नहि कैलाह, जतय राहुल हुनका सँ भेट करऽ वाला रहथीन्ह । ओ ग्नेनाम पहुँचलाह । ओ एहि ठाम तिब्बती घुमन्तू व्यापारी सभक संग भऽ गेलाह जे याक सब पर नोन लादि कए लऽ जाइत छल ओ नपाल मे चाउर आ अन्न क बदला मे ओकरा वेचैत छल । राहुल डुक् पा लामा सँ भेट कयलन्हि । भाटकोसी आ तातापानी सं होइत हुनकर दल मे एक व्यक्ति वनि गेलाह । नेपाल क सीमा अधिकारीगण हुनका सं पूछताछ कयलकन्हि । राहुल अपन नाम छेवान्डग बतौलन्हिं, जे खुन्नू (किन्नौर) मे जन्म लेने छलाह आ देखाव लगलाह जेना रौंग क अवतारी लामा क चेला हौथि । डुक्-पा लामा ग्नेनाम मे अपन डेरा खसा व्यस्त भऽ गेलाह, हुनकर चेला सब हुनका चढ़ौआ चढ़बैत रहलथीन्ह जे ओ लैत हलाह । ओम्हर राहुल तिब्वत जएबा क लेल बहुत अधीर आ उत्कंठित भऽ रहल छलाह । हुनकर प्रमुख समस्या छलन्हि "लाम-चिक" (भूमि सीमा पार करवा क अनुमति पत्र) कोना प्राप्त करी । बोधगया मे एकटा मंगोल भिक्षु सं हुनका भेट छलन्हि । राहुल के सुसंयोग सं ओहि मंगोल भिक्षु सं ओतय भेट भऽ गेलेन्हि आ ओ हुनका दू टा पारपत्र आनि देलकन्हि । राहुलक एहि "लोवजादशेराव" (जकर संस्कृत अनुवाद होइत छैक "सुमति प्रज्ञ") नाम क मंगोल भिक्षुक भारी वोझ अपन कान्ह पर लादि, ओकर संग भ गेलाह । मुदा रस्ता सुरक्षित नहिं छल । ओत ढेरी डकैत आ लुटेरा सब छलैक । कोनो अनभुआर के, जे डकैत एहन लगैत छैक, देखिते राहुल अपन टोपी उतारि कऽ, जीभ देखा कऽ, हाथ पसारिक "कुची-कुची" (दया करू) कहथि । ताहि दिन मे कतेको व्यापारी सभ लामा वा भिक्षु क भेस बनाक, बहुमूल्य वस्तु सभ ल जाइत छल । ते ई डकैत पहिने यात्री क हत्या करैत छल आ बाद मे ओकर सामान के ताकैहैरै छल । सौभाग्य सँ कोशी नदी क बर्फ सन पानि पारकऽ कए ओ शकर पहुँचलाह जत ल्हार्चे धरि हुनकर सामान लऽ जायवाला किछु गदहा भेटि गेलन्हि । ब्रह्मपुत्र क किनार-किनार बहुत नहुं नहुं चालि सं चलैत-चलैत नारयांडा धरि ओ एकटा टट्टू पर गेलाह । एहि मठ मे ग्यारहम शताब्दी क ३३८ टा ग्रंथ छैक । बेसीतर भारतीय ग्रंथ सभक तिब्बती अनुवाद छैक । ओ वासी लहुंपो गुंबा धरि पहुँचलाह आ ताशी लीमो

117120
9.12.'04

सँ भेट कयलन्हि, जे चीन भागि गेल छलय । दलाई लामा क बाद ओहि समय मे वेह सबसं पैछ शक्तिशाली धर्मगुरू ओत छल । शिगार्चे सं राहुल डिकि थोमो, जराला दर्श, नगाचे डांडे-खाम वाला होइत, छू-ओरी मे एक नाव सँ ब्रह्मपुत्र पार करैत एक टा टट्टू पर बैसि कए ल्हासा पहुँचलाह । १९ जुलाई १९२९ के हुनका दूर सं पोटाला मठ क सोनगर छत देखवा मे अएलन्हि । तीन घंटा चलि कए ओ धर्मा साहु क घर पहुँचलाह, जतय हुनकर पूर्ण स्वागत भेलनि । राहुल नेपाल मे धर्मा साहू सँ भेंट कयलन्हि, ओ हुनकर दूनू बेटा, पूर्णमान आ ग्यामान साहू क नाम सँ पत्र लऽ गेल छलाह ।

आखिर राहुल ल्हासा पहुँचलाह, जे तिब्बत क राजधानी छल । ब्रिटिश सरकार ई नहि जानि पाएल जे ओ कोन देश मे सँ ओतऽ पहुँचलाह । आ तिब्बत विदेशी लोकनि क लेल निषिद्ध छल । राहुल सोचलन्हि जे दलाई लामा क बौद्ध शिष्य क संबंधे ओ हुनका लग पहुँचथि । ओ १५१ टा छंद क रचना संस्कृत मे कयलन्हि, जकर अनुवाद भोट भाषा मे कयलन्हि, आ ओकरा सुन्दर अक्षर मे लिखी कए, दलाई लामा क एक टा विश्वसनीय शिष्य डरी-छांग क हाथे ओहि कविता के पढ़वा देलथिन्ह । लामा पढ़ि कए बहुत प्रसन्न भेलाह । ओ आश्वासन देलथीन्ह जे कोनो दिन एहि कविता क कवि के बजौताह । बाद मे ओ एहि विषय मे बिसरि गेलाह । राहुल देपुंग गुंबा गेला, जतए सात हजार भिक्षु विभिन्न देश सभक अलग-अलग "सामजान" अथवा छात्रावास सभ मे रहथि । मुदा भारतीय लोकनिक लेल कोनो एहन छात्रावास नहि छल । राहुल छोट-छोट कागज क टुकड़ी सब पर १६००० भोट शब्द जमा कयलन्हि आ ओकरनेपाली आ संस्कृत मे अर्थ सेहो नोट कयलन्हि । आरंभ मे हुनक विचार ओतऽ तीन वर्ष धरि रहवाक छलन्हि, जाहि सँ मात्र तिब्बत मे प्राप्त बौद्ध ग्रंथ सभक शोध आ अध्ययन ओ कऽ सकथि । मुदा सबसँ पैघ कठिनाई आर्थिक छलन्हि । काशी विद्यापीठ क आचार्य नरेन्द्र देव पचास रूपैया मासिक शिष्य-वृत्ति पठयवा क व्यवस्था कऽ देने छलाह । श्रीलंका सँ भदन्त आनंद कौसल्यायन तीन हजार टाका दुर्मिल पोथी सबआ टांका किनबा क हेतु पठयवा क प्रबंध कयलन्हि । राहुल साम्-वे क सबसँ प्राचीन, महाविहार के देखवा क लेल गेलाह जतऽ नालंदा क भिक्षु शांति रक्षित क शरीर सुरक्षित राखल गेल छल । मुदा ओ मंदिर सं सटल खंडहर बनि चुकल छल । "गे-गर-लिंग" (भारतीय द्वीप) जतए भारतीय विद्वान ग्यारहम शताब्दी मे रहैत छलाह आ संस्कृत ग्रंथ क तिब्बती मे अनुवाद करैत छलाह, बहुत खराब अवस्था मे छल । एतय एक टा पैघ ग्रंथालय छल, जाहि मे एहन-एहन दुर्लभ ग्रंथ सब छलैक जे दीपंकर श्री ज्ञांन क शब्द मे, विक्रमशिला मे सेहो उपलब्ध नहि छल । मुदा ई पुस्तकालय कतेको वर्ष पहिनहिं आगि मे स्वाहा भऽ गेल छल । राहुल के एक्को टा संस्कृत क पोथी नहि भेटलन्हिं । हँ, तिब्बती किछु ग्रंथ आ चित्र ओ अवश्य किनलन्हि अट्ठाहर टट्टू सब पर, जे सामग्री ओ प्राप्त कयलन्हिं ओ लादि कए, कलिंपोंग धरि अनलन्हि । लौटैत काल रास्ता मे ओ किछु आओर पोथी भेंट स्वरूप प्राप्त कयलन्हि, किछु ओ किनलन्हि—शालु बिहार आ ताशा ल्हुम-पो,

नारथांग आ गेयांची में । ''कंजूर'' आ ''तंजूर'' क अतिरिक्त ओ अपना संग १६१९ तिब्बती हस्तलिखित ग्रंथ अनलन्हि — २४ अप्रैल सं ३ जून १९३० धरि । ई सब पोथी पटना म्यूजियम के उपहार स्वरूप दऽ देल गेलैक जे काशी प्रसाद जायसवाल कक्ष मे राखल गैल छैक ।

राहुल क ''कंजूर'' आ ''तंजूर'' संग्रह क ई आरंभिक काज कतवा महत्वपूर्ण छल एकर अनुमान एही बात सँ लागि सकैत अछि जे तिब्बती त्रिपिटक क तंत्र आ सूत्र संहिता सभक सूची मात्र जापान मे आ सेहो १९३६ मे प्रकाशित भऽ सकल । अन्य भाषा सभ मे ओकरा विषय मे कोनो जानकारी नहि छैक । राहुल एहि ग्रंथ क दुर्लभ प्रति ल्हासा अनलनि । ओ अपना संग धर्म, दर्शन, इतिहास,जीवनी, कला, ज्योतिष, चिकित्सा, भूगोल आदि विषय सभ पर कतेको दुर्लभ पोथी अनलनि । दार्शनिक ग्रंथ मुख्यत: नागार्जुन क माध्यमिक शाखा आ असंग क योगाचार शाखा क विषय मे अछि । ई दूनू प्रसिद्ध बौद्ध नैयायिक छलाह । सातम सँ दशम शताब्दी धरि लिखल तिब्बत क ग्रंथ सब सेहो एहि संग्रह मे अछि । राहुल अपना संग पद्मसंभव वुसितान आ तारानाथ क ''क्रिया तंत्र'', ''चर्या-तंत्र'' आ ''योग-तंत्र'' क ग्रंथ सेहो अनने छलाह । बहुतो साहित्यिक ग्रंथ सेहो एहि संग्रह मे छैक : दंडी क ''काव्यादर्श'' पर ल्ना-पा क दू टा टीका सब, ''कल्पलता'' क दू तिब्बती अनुवाद आ पाणिनी क ''धातु-पाठ'' पर दुर्गा सिंग क भाष्य, इत्यादि । एक टा ऐतिहासिक ग्रंथ मे मगध पर मुसलमान आक्रमण आ उर्दतपुर आ विक्रमशिला विश्वविद्यालय सभक महानाश क वर्णन सेहो छैक । डा. अ. स. अलतेकर भारतीय शिक्षा विषयक ग्रंथ मे एहि बात सभक विस्तार सँ चर्चा कएने छथीन्ह । बौद्ध महायानी आ वज्रयानी देवमाला संबंधी १३० चित्र (पट) सेहो राहुल अपना संग अनने छलाह । १९३४ सं १९३८ क बीच राहुल तीन बेरि तिब्बत गेलाह आ ओतय सं किछु दुर्लभ वस्तु सभ मठ सँ संग्रह कए लऽ अनलन्हि । ओ प्रथम तिब्बती व्याकरण ओ तीन बाल पोथी नागरी मे लिखलनि । ओ अपना संग धर्मकीर्ति क ''प्रमाणवार्तिक'' वृत्ति अनलनि, जकर तिब्बती सं संस्कृत मे ओ पुन: पुनर्रचना कयलनि । ओ एकटा ''तिब्बती-हिंदी-कोश'' सेहो संकलित कयलनि, जकर प्रथम खंड, हुनक मृत्यु क उपरांत साहित्य अकादेमी प्रकाशित कयलक ।

राहुल क जीवन कथा आगां कही । तिब्बते क यात्रा सब मात्र हुनक जीवन क प्रधान कार्य नहि छलन्हि । ओ श्रीलंका १९३० मे गेलाह, १९३१ मे भारत मे सत्याग्रह मे भाग लेलनि ओ पुन: तेसर बेर १९३१-३२ मे श्रीलंका गेलाह १९३२-३३ मे यूरोप गेलाह । इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी मे कतेको प्राच्य विशारद सब सँ भेंट कयलनि । १९३५ मे मंचूरिया सँ रेल द्वारा सोवियत रूस पहुँचलाह । २० अगस्त १९३५ मे ओ ट्रेन मे बैसलाह आ सात दिन धरि ओही गाड़ी मे बैसिक मास्को पहुंचलाह । ४ सितंबर सं २१ सितंबर १९३५ एक पक्ष ओ रूस मे बितौलनि । हुनका शिक्षाविद् ओल्डेनवर्ग आ श्चेर्बात्स्की सँ भेट करबा क तीव्र इच्छा छलनि । मुदा ओल्डेनबर्ग ता धरि जीवित नहि

छलाह आ श्चेर्बात्स्की लेनिनग्राद मे छलाह, जतऽ राहुल के जयवाक अनुमति नहि भेटलन्हि । मास्को सँ रेल सँ ओ बाकू गेलाह जतए ओ "अग्निमंदिर" देखलन्हि । राहुल हुनका ज्वालामाई कहैत छथीन्ह । ओतय नागरीलिपि मे एकटा शिलालेख ओ देखलन्दि । ओहय सँ ओ पनिया जहाज सँ ईरान गेलाह जतए ओ तेहरान, शीराज आ मर्शद देखलन्हि । ओ बलूचिस्तान होइत, ट्रेन सं लाहौर पहुंचलाह । राहुल सं "कंजूर" डा. प्रवोधचन्द्र बागची कलकत्ता विश्वविद्यालय क हेतु कीन लेलनि ।

अपन आत्मकथा मे ओ वयालीस वरख क आयु मे टाइफाइड (विपम-ज्वर) सं पहिल वेर अपन गंभीर बीमारी क चर्च कयने छथि । पटना क एक टा अस्पताल मे ओ पांच दिन धरिवेहोश रहलाह । मुदा ओ फेर १९३६ मे तिव्वत, १९३७ में ईरान आ १९३७-३८ मे सोवियत रूस गेलाह । एहि बेर ओ सोवियत अकादमी क निमंत्रण पर रूस गेल छलाह । मास्को सं ओ लेनिनग्राद गेलाह जतए ओ १७ नवंबर १९३७ सं १३ जनवरी १९३८ धरि रूकलाह । एतय हुनक भेंट भारतीय तिव्वती विभाग क सचिव लोला (एलेगा नर्वेर्तोव्ना कोज़ेरोवस्काया) नामक महिला सँ भेलनि । ओ संस्कृत-तिव्वती कोश वना रहल छलीह । हुनका फ्रांसीसी, अंग्रेजी, रूसी आ मंगोलियन भाषा अवैत छलन्हि । राहुल हुनका संस्कृत पढ़ौनाई शुरू कयलनि आ ओ राहुल के रूसी पढ़ौनाई प्रारंभ कयलथीन्ह । दूनू क मैत्री गहन आकर्पण आ विवाह मे परिणत भऽ गेलन्हि । लोला एहि पुस्तक क लेखक के वतौलनि जे हुनक आरंभिक प्रेम-पत्र संस्कृत मे छल । हुनका सँ राहुल के इगोर नाम पुत्र ५ सितंवर १९३८ के प्राप्त भेलन्हि । (इगोर क नाम ओ "अग्नि", रूसी "ओगोन" राख चाहैत छलाह) । पुनः जखन ओ सोवियत रूस मे, जुलाई १९४५ मे पहुँचलाह तखनहिं पुत्र क दर्शन भलेनि । ई यात्रा १७ अगस्त १९४७ के समाप्त भेल । ओहि वरख क वाद ओ अपन पत्नी आ पुत्र के कहियो नहिं देख सकलाह । लोला पुनः विवाह नहि कयलन्हिं । १९६२ मे जखन राहुल विस्मृति क रोगी भऽ गेलाह आ सोविय रूस लऽ जाएल गेल छलाह, तखन ओ हुनका सं भेट करऽ आयल छलथीन्ह । महापंडित क आँखि सँ मात्र नोर झरि रहल छल । कोनो संवाद संभव नहि छल । एहि पोथी क लेखक के अक्टूबर १९७२ मे लेनिनग्राद मे, लोला सं हुनक घर पर भेट भेल, छलनि । लोला राहुल आ श्चेर्बात्स्की एवं इगोर क बाल्यावस्था क फोटो क एक टा एलबम देखौने छलथीन्ह । न लोला आ न इगोर के हिन्दी बाजऽ अबनि । न दूनू गोटे लग राहुल क कोनो पोथी छलन्हि । न ओ दूनू कहियो भारत आबि सकलाह ।

राहुल राजनीतिक कार्यकर्ता भऽ गेल छलाह । १९३९ मे ओ अपना के पूर्णतः बिहार क किसान संघर्ष मे झोंकि देने छलाह । ओ जेल पठा देल गेलाह । ओत ओ दू बेर दीर्घ उपवास कयलन्हिं—एक बेर १० दिन क आ दोसर बेर १७ दिन क । ई उपवास जेल क स्थिति सुधारबा क लेल छलैक । किछु मास क बाद ओ छोड़ि देल गेलाह । २४-२५ फरवरी, १९४० मे मोतीहारी क किसान सम्मेलन क ओ अध्यक्षता

कयलनि । पुनः १९४०-४२ मे ओ पकड़ल गेलाह आ हजारीबाग आ देवली जेल मे राजवंदी क रूप मे २९ मास वितौलनि । एहि कारावास क समय मे राहुल अपन पैघ संस्मरणीय ग्रंथ लिखलनि ''दर्शन-दिग्दर्शन'' (८४७ पृष्ठ) ई हिन्दी मे, पहिल बेर यूनानी, इस्लामी, यूरोपीय आ भारतीय दार्शनिक विचार धारा क विश्लेषणात्मक परिचय आ मार्क्सवादी दृष्टि सं समीक्षा प्रस्तुत कर वाला ग्रंथ अछि । तीन हजार वर्ष क दार्शनिक उहापोह क बुद्धिवादी-मानवतावादी दृष्टिकोण सं कएल गेल ई अध्ययन एक विराट सर्वग्राही ऐतिहासिक प्रयत्न छल ।

भारतीय आ विदेशी दार्शनिक सभक एकटा तुलनात्मक चार्ट, दैत ''दर्शन-दिग्दर्शन'' क अंत मे राहुल मात्र दू टा आधुनिक भारतीय चिंतक क नाम दैत छति आ हुनका लोकनिक समकालीन अनेको विदेशी लोकनिक क उल्लेख करैत छथि—हेगेल (१७७०-१८३१), राजा राममोहन राय (१७७४-१८२९), मार्क्स (१८१८-८३), दयानंद (१८२४-८३) विदेशी लोकनि मे ओ अनेक दार्शनिक सभक नाम-सूची दैत छथि आ हुनकर योगदान क चर्चा करैत छथि-दर्कात, स्पिनोजा, लॉक, वकले, वाल्तेयर, ह्यूम, रूसो, कांट, फिशे, शेलिंग, शॉपिन हाउर, फयूरबाख, स्पेंसर, एंगेल्स, मार्क्स, विलियम जेम्स, नीत्शे, ब्रैडले, बेर्गसां, वाइटहेड, लेनिन और बर्ट्राड रसेल । अंत मे जे संदर्भ ग्रंथ-सूची ओ देने छथि, जकर आधार पर ई ग्रंथ जेल मे ओ लिखलन्हि, अनेक संस्कृत, पालि, अरबी, फारसी ग्रंथ सभक संग-संग ओ केवल तीन टा भारतीय दार्शनिक क अंग्रेजी ग्रंथ क नाम दैत छथि—एस.एन. दासगुप्त, एस. राधाकृष्णनन एवं एस.सी.विद्याभूषण । संगहि मार्क्स, एंगेल्स फयूएरबाख़ आ श्चेर्वास्की क पांच टा ग्रंथ त अछिये ।

जेल सं छुटला क बाद, सब सँ मार्मिक वर्णन ओ चौतींस बरख क बाद अपन जन्म ग्राम क यात्राक कयने रहथि । गाम मे सब किछु बदलि गेल छैक आ तइयो किछु नहि बदलल छैक । हुनक बाल्यावस्था क सहपाठी लोकनि कोना प्रेम सं हुनकर स्वागत कएलथीन्ह । हुनकर पहिल पत्नी हुनका सँ भेट कर अएलथीन्ह । मुदा ओ तऽ विवाह-विधि क तुरत बाद, द्विरागमन होम सं पूर्वे, हुनका छोड़ि आयल छलाह । १९४२ सं. १९४४ धरि ओ भारत भरि मे घुमैत फिरैत रहलाह, कखनहु राजनैतिक काज सँ, कखनो साहित्यिक सभा सबमे । ओ अपन यात्रा सभक विस्तार सँ वर्णन दैत छथि—अपन डायरी सभक आधार पर । एतय एक अत्यंत जिज्ञासु, ज्ञान पिपासु मनक दर्शन होइत छैक । कतहु ओ नेपाली देवी-देवता सभक आ भूत सभक अठ्ठारहो प्रकार गनबै छथि त कतहु तिब्बत क ग्यारह पिशाच सभक, आ ठाम-ठाम बाजऽ जाय बाला बोली क रेवाज क आ विश्वास क विस्तार सँ परिचय दैत जाइत छथि । हुनक लेखन एकटा अद्भुत कोश-संग्रह अछि जाहि मे निम्न विषय सभक अद्भुत जानकारी प्राप्त होइत छैक—सांस्कृतिक मानवशास्त्र, समाज विज्ञान, आर्थिक स्थिति, भाषा शास्त्र, प्रवास क कठिनाई, भौगोलिक आ भूस्तर विषयक बात सभ, राजनैतिक तनाव आ दबाव, पुरातत्व आ धर्मेतिहास, अज्ञात मतपंथ आ ओकर विश्वास अनुबंध सब एके संग एकके मोटरी मे सहजतापूर्वक अपना

संग नेने ओ चलैत छलाह । आ यैह सब ज्ञान ओ अत्यंत मनोरंजक आ स्वाभाविक अकृत्रिम शैली सं तेना दैत छलाह, जेना पाठक सब सँ गप-शप क रहल होथि—पाठक के कतहु एहन नहि लगैत छलैक जे ओकरा पर कोनो लेखक दबाव दऽ रहल होइ अथवा बोझ राखि रहल हो ।

१९४८ क बाद राहुल अधिक काल भारते मे रहलाह । मात्र एक बेर चीन आ दोसर बेर श्रीलंका मे पढ़ाबऽ गेलाह । एहि यात्रा सभक बाद ओ अस्वस्थ भऽ गेलाह । आ हुनक अंतिम बेर सोवियत रूस क यात्रा विस्मृतिये क अवस्था मे छलहि । एहि पोथी क लेखक राहुल क निकट संपर्क मे १९४४ मे अयलाह, हुनका संग एक टा कोश क संपादन कार्य मे १९४८ मे सहयोग कयलनि । उज्जैन मे १९४४ मे आ इलाहाबाद मे १९५० मे राहुल एहि पंक्ति क लेखक क घर पर रुकलाह । तीन ग्रीष्मावकाश सभ मे ई लेखक आ ओकर परिवार राहुल क अतिथि रहल, नैनीताल मे, दार्जिलिंग मे, कलिपोंग मे आ कूंमायूं मे, मंसूरी मे । ओ एहि लेखक क घनिष्ट पारिवारिक मित्र भऽ गेल छलाह ।

हुनका मधुमेह क घोर कष्ट छलन्हि । अति परिश्रम आ वैयक्तिक चिंता सभ हुनका ततेक अस्वस्थ बना देने छलन्हि जे जीवन क अंतिम दू वर्ष मे हुनक स्मृति शेष नहि रहलन्हि । ओ एक टा अत्यंत दुःखद दृश्य छल जे एतेक पैघ विद्वान अपन नामो धरि नहि पढ़ि पाबि सकैत छल, न सुसंगत ढंग सं बाजि सकैत छल । एहन व्यक्तिगत आघात सभक आ विस्मृति क पूरा कारण कहियो नहि जानल जा सकत । "निराला" जीवन क अंतिम वर्ष सभ मे, आ काजी नजरूल इस्लाम जीवन क अंतिम पूरा चौंतीस वर्ष धरि एहि तरहें कष्ट मे रहलाह । एहि महान विद्वान आ रचनाकार लेखक क संपूर्ण जीवन क सक्रियता आ गतिशीलता क अंत बहुत बेसी शोकप्रद भेल । प्रायः हुनका भरिपोख प्रतिदान समाज सँ नहि भेटलनि, हुनकर उपेक्षा भेलन्हि । हुनका पूरा काज क बाद जेहन स्वाभाविक विश्रांति चाहैत छलन्हि से नहि भेटलन्हि । ओ बहुत बेसी वएस मे विवाह कएलन्हि आ अपन बच्चा सभक भविष्य क चिंता हुनका भीतरे-भीतर कुतरैत रहलनि । ओ अपन अंतिम अर्द्धमूर्छाक अवस्था मे बुदबुदाइत रहैत छलाह "दू बच्चा—तीन बच्चा" । भऽ सकैत अछि जे हुनकर शरीर हुनकर मोन क संग नहिं देलकन्हिं आ ओ एही भ्रम मे अपना क रखने रहलाह जे औषधि सभक मदद सं शरीर के जवानी जकां सक्रिय राखल जा सकैछ । मात्र हुनकर तेसर पत्नी कमला सांकृत्यायन हुनक एहि अंतिम अवस्था क विषय मे अधिकारिक ढंग से लिखि सकैत छथि । हालांकि, सबकिछुं कहला आ अनुमान कयलाक बादो सत्य ओतबए रहस्यमयी रहत, जतबा ओ आई अछि । मृत्यु, ईसाक मजाक उड़ाबऽ वालापाइलट जकां, उत्तर क प्रतीक्षा नहि करैत अछि ।

व्यक्तिगत रूप सं राहुल बहुत उदार आ स्नेहशील छलाह । अत्यंत आत्म-संयमी, अनुशासित राहुल दिन मे अट्ठारह घंटा धरि काज क सकतै छलाह । हुनकर अपन व्यक्तिगत रूचि आ सौख सब बेस सीमित छलन्हि । सादा वस्त्र, सादा भोजन । राहुल

क मित्र सब मे तरूण शोधार्थी लोकनि क बड्ड संख्या छलनि । ओ स्पष्टवक्ता छलाह, निर्भीक छलाह आ सत्ताक लोकप्रियता क शिखर पर विराजमान महान व्यक्ति सभक आ नेता सभक भावनाके कष्ट देबऽ वाला आलोचना करबा मे हुनका कष्ट नहि होन्हि । जहाँ धरि हुनक विश्वास सभक प्रश्न छल ओ साफ-साफ कहैत छलाह सत्य कहबा मे कनिको ''नरो वा कुंजरो'' नहि ।

हुनक फुरसतिक समय अक्सर लिखबा-पढ़बा मे बीति जाइन्हि । लिखबा मे ओ सशक्त आ क्रोधी बुआइत छथि मुदा बाजबा मे ओ अतिशय सौम्य आ कम बाजय वाला छलाह । मंच पर भाषण देबाक कला मे ओ प्रवीण नहि छलाह । ओ चौंतीस सँ ऊपर भाषासब जनैत छलाह मुदा लिखबा आ बजबा मे संस्कृत आ हिंदिये क प्रयोग करैत छलाह ।

जे भाषा, ओ भाषण आ अपन किताब सभ मे प्रयोग करैत छलाह, ओ बहुत सरल छल । ओ सदिखन सामान्य पाठक के ध्यान मे रखैत छलाह । हुनकर लेखन मे कखनौ-कखनौ प्रचारक क आग्रही एकांगिता आबि जाइत छलन्हि, मुदा अंधनिष्ठा सँ ओ सदिखन दूर रहलाह । एक टा एहन व्यक्ति क लेल जे बहुत गरीबी मे सँ उठि क बेसी स्वयं-शिक्षित छल, एहन प्रगतिशील, बुद्धिजीवी, धर्म-निरपेक्ष, मानवतावादी दृष्टिकोण प्राप्त केनाई आ विकसित केनाई, एक टा असामान्य उपलब्धि छलन्हि । कतहु-कतहु ओ अंध विश्वासी, रहस्यवादी, अर्द्ध अध्यात्मवादी सभक विरूद्ध कठोर शब्द लिखि जाइत छथि, मुदा राहुल अपन रचना मे कतहु कटु नहि छथि । ओ सदिखन दोसर पक्ष क बात जानऽ चाहैत छथि, सब किछ मे किछु नीक ताकऽ चाहैत छलाह, जे चीज एकदम नहि जंचऽ वाला छलन्हि आ विचित्र लगन्हि ओकरो बूझऽ चाहैत छलाह । ओ एहि अंतर्व्याप्त सहानुभूति सँ भरल छलाह । राहुल बौद्ध ''करूणा'' क सिद्धांत के विकसित कयलन्हि । एहि सँ हुनकर जीवन आ साहित्य क पाठक सब पर गहीर असरि पड़ल छलन्हि । हमरा लोकनि क लग-पास जे लेपटाएल दुनिया अछि ओकरा सांगोपांग बुझबाक राहुल यत्न कयलन्हि । एहि प्रक्रिया मे ओ एकटा नव आत्मबोध, एक टा नव मानव क संतुलन आ अंततः समन्वय क खोज कयलन्हि ।

राहुल अपन जीवन अथवा लेखन मे रोमांटिक अथवा भावुक कनिको नहि छलाह । हुनका अन्य मानव सँ, ओ चाहे पैछ हो वा छोट, समानधर्मा हो वा विरोधी, सर्वदा मैत्री क एक टा शौधार्थीक संबंध छल । ओ ने त कतहु सर्वनिराधारवादी छलाह आ ने सार्वनिंदक । ''तुम्हारी-क्षय'' पोथी मे सँ ओ किछु संस्था सभक आ मानवीय पूजा-स्थान क आ प्रतिभा सभक तीव्र निषेध करैत छथि । ओ राजनैतिक द्वुलमुलवादी हैमलेट लोकनिक (जेना भोजपुरी नाटक ''द्वुनमुन'' मे) मजाक उड़ैबत छलाह । स्त्री-शक्ति क पुरुष पर शासन हुनक नर्मविनोद क विषय छलन्हिं । तथा कथित धर्म गुरू लोकनि क ढोंगी कथनी-करनी क अंतर्विरोध क ओ पर्दाफाश करैत छथि । मुदा सर्वत्र राहुल क संबोधि सँ दीप्त, करूणा आ मैत्री सँ भरल मुद्रा, एहि सब रूप क पाछाँ नुकाएल छलन्हि, अथवा ई कही जे कतहु नुकाएल नहि रहि सकैत छलन्हि ।

कृतित्व

हुनक सम्पूर्ण रचना सभक एकटा वर्णनात्मक सूची सेहो जौं देल जाय त एहि पोथी क पृष्ठ संख्या क सीमा सँ बेसी हेत । हम एतय हुनक साहित्यिक कृति क सर्वेक्षण करब जाहि मे रचनात्मक आ आलोचनात्मक दूनू तरह क कृतित्व अबैत छैक, आ चूकि साहित्यक व्यापक संदर्भ मे मानविकी अबैत अछि, जाइत-जाइत ओहि प्रकाशित पोथीसभक उल्लेख करब जे दर्शन, इतिहास, समाजशास्त्र आ तत्सम शाखा सभक पुस्तक अछि । १९२७ सँ, चौंतीसे वरख क आयु सँ जो नियमित रूप सँ लिखनाई प्रारंभ कय देलन्हि, आ १९६१ धरि ओ चलैत रहल, जखन ओ बहुत दुखित पड़ि गेल छलाह । प्रकाशचन्द गुप्त लिखने छथि—''ओ अपन लिखवा क आदति मे, घड़ी जकां, नियमित छलाह ।'' ओना ३४ वर्ष मे ओ करीब ५०,००० पृष्ठक साहित्य प्रकाशित केलन्हि । अखनहु हुनकर बारह पांडुलिपि सब अप्रकाशित छन्हि । जखन हम सब इहो ध्यान मे लैत छी जे ओ देश-विदेश क साहसिक यात्रा करैत रहलाह, विदेश आ जेल मे सेहो रहलाह, ओहि सब कष्टमय जीवन-बरख सभक बादो ओ जतबा लिखलनि ओ अपने मे एक टापैध काज थीक । एहन आदमी, जे सदिखन घुम्मकड़ रहल हो, एतेक विपुल-लेखन-संभार हमारलोकनि के आश्चर्यचकित करैत अछि । ओ बेस तेजी सँ आ अनथक लिखैत छलाह । ओ विशेष प्रकार क ''मूड'' बनबा क प्रतीक्षा नहि करैत छलाह आ ने आराम-तलब हालतक खोज मे रहैत छलाह । ट्रेन मे होथि वा जहाज मे, बस-अड्डा पर होथि वा धर्मशाला मे, तंबू मे होथि वा होटल मे, घर मे होथि वा प्रवास मे, ओ निरंतर लिखते रहैत छलाह ।

कथा-उपन्यास

राहुल तेरह टा ग्रंथ कथा-उपन्यास लिखलन्हि ।ओहि मे प्रसिद्ध छैक ''सिंह सेनापति'' आ ''जय-यौधेय'' (प्रस्तुत लेखक ''विशाल भारत'' मे एहि ग्रंथ सभक आलोचना १९३८ मे केने छल) ''विस्मृत यात्री'', ''दिवोदास'' आ ''मधुर स्वप्न'' । पहिल तीन उपन्यास प्राचीन आ मध्ययुगीन भारत क इतिहास के लऽ कए अछि, ''दिवोदास'' वैदिक आर्य सभक जीवन पद्धति पर आधारित ''फंतासी'' अछि, आ अंतिम फारस क प्राचीन इतिहास के लऽ कए अछि । राहुल मात्र दू टा सामाजिक उपन्यास लिखलन्हि—''जीने के लिए'' आ ''रनिवास'' । ''जीने के लिए'' मे १९१४ मे प्रथम महायुद्ध मे भाग लऽ कए घर छुटि आएल एक टा किसान सिपाही क कथा अछि, जेबाद मे जमींदारी,

सामंतवाद, साम्राज्यवाद क विरोध करऽ वाला क्रांतिकारी आन्दोलन मे भाग लैत अछि । एहि मे १९३९ धटि क कथा छैक । दोसर उपन्यास ''राजस्थानी रनिवास'' मे राजस्थान क महल सब मे आ हरम सब मे रह बाली नौंड़ी (बांदी) आ पासी सभक शोक भरल भयानक जीवन क वर्णन अछि । दू ग़ आओर कृति, जे ''फंतासी'' जकाँ अछि—समाजशास्त्रीय बेसी अछि—''बाईसवीं सदी'' मे आदर्श राज्य क वर्णन अछि त दोसर बाजऽ भूकऽ क भाषा मे, संवाद शैली मे लिखल पोथी अछि—''भागो नहीं दुनिया को बदलो'' ।

चारि टा कथा-संग्रह सभ मे ''सतमी के बच्चे'' मे ओहि दयनीय बच्चा सभक दुःखद सत्य कथा सब छैक जकर एहन दैन्यमय जीवन बितबै पड़ैत छैक, दरिद्रता और सामाजिक विषमता सँ लड़ैत ई सब रेखाचित्र, सत्य ग्राम्य जीवन सँ, बूझू जहिना छैक तहिना, सजीव रूप मे, माटि सँ उठाओल गेल अछि । एहि मे गोर्की-जकाँ सामाजिक यथार्थवादिता क आग्रह झलकैत छैक । गोर्की लेनिन के लिखने छलाह—''नीक किताब सँ एक टा खराब आदमी बेसी नीक होइत अछि'' । एहि पोथी मे एक टा ऐतिहासिक कहानी सेहो छैक—जेकर शीर्षक छैक—''स्मृतिज्ञान-कृति'' ।

दू टा आओर कथा संग्रह दू टा आओर स्थान सभक सामाजिक आ ऐतिहासक स्थिति क वर्णन करऽ बाला छैक । विलासी मसूरी क बाईस चित्र क बहुरंगी मधुपुरी मे अछि । एहि मे सँ नौ टा चुनल खिस्सा सब ''रूपी'' नामक संग्रह मे पुनमुद्रित भेल छैक । ''कनैला की कथा में कथा शब्द सार्थक नहि छैक । वस्तुतः ओ १३०० ईसा पूर्व सँ १९५७ ई. धरिक जीवन-पद्धति विकासपरक नौ टा कथा सब अछि । एहि पुस्तक क बंगला मे अनुवाद मे एकरा ''बोल्गा से गंगा भाग-२'' कहल गेल अछि ।

सब सँ महत्वपूर्ण ''कथा-संग्रह'' जकरा राहुल क स्थायी कीर्ति भेंटलैक अछि—''वोलगा से गंगा'' । प्राग्वैदिक कालसं १९४४ धरि क आधुनिक भारत क एहि मे बीस टा कथा छैक । चौदह टा कथा प्राचीन आ मध्ययुगीन भारत क छैक, पन्द्रहम कथा सं मुसलमान राज आ अंग्रेजी राज क पार्श्व भूमि प्रारंभ भ जाइत छैक । राहुल इतिहास क एक टा विशेष काल खंड चुनैत छथि, आ ओहि मे एक टा विशेष कथा-स्थिति एहि तरहे पुनर्रचित करैत छथि आ ओकर विश्लेषण करैत छथि जे द्वंद्वात्मक भौतिकवादी दृष्टिकोण सँ भारत क इतिहास सामना मे खुज लगैत अछि । कतहु-कतहु कालिदास के सामंती राजकवि देखयवा मे अथवा कृत्रिम हिन्दू-मुसलमान एकता क वर्णन मे राहुल क पूर्वाग्रह हुनक वस्तुनिष्ठता क ऊपर हाबी भ जाइत छन्हि, परंतु एहि पोथी क कल्पना आ निर्वाह दूनू दृष्टि सँ, ई कृति आधुनिक हिन्दी साहित्य क पूरा भारतीय साहित्य क तरफ टा बहुत पैघ योगदान छलन्हि ।

जीवनी आ आत्मजीवनी

राहुल क साहित्यिक गद्यक एक टा पैद्य भाग छैक आत्मकथा क पांच खंड, आ

सत्रह टा आओर पोथी सब जाहि मे पूरा जीवनी सब छैक आ जीवन-चरित्र क संग्रह छैक ।

आत्मकथा २८१४ पृष्ठ क छलन्हि । स्वर्गीय शिवचन्द्र शर्मा लिखने छथि—''भारत आ भारत क वाहर क व्यक्ति सव आ दल सब जे राजनैतिक सामाजिक, साहित्यिक आ ऐतिहासिक स्थिति सव जे उत्पन्न करने छल, ओकर ई प्राय: ज्ञानकोशे थीक । एहि मे राहुल क विषय मे कम, और लोकक विषय मे वेसी अछि'' ।

चारि टा आर पोथी सेहो आत्मकथात्मके वेसी अछि—''वचपन की स्मृतियाँ, ''अतीत से वर्तमान'' जकाँ अहू मे स्मृति चारण आ जाहि महान व्यक्ति क संपर्क मे अयलाह तेकर विवरण अछि, ''मेरे असहयोग के साथी'' मे ५५ व्यक्ति सव के श्रद्धांजलि देल गेल छलन्हि, जेना ''जिनका मैं कृतज्ञ'' ग्रंथ मे देखवा मे अबैत छल ।

ऐतिहासिक क्रम सँ ओ जे आर जीवनी सव लिखलन्हि ओहि मे छल ''महामानव बुद्ध'', ''सिंहल के वीर पुरुष'' (सात महापुरुष क जीवन रेखा), ''सिंहल घुमक्कड़, जयवर्धन, ''सरदार पृथ्वीसिंह'', ''घुमक्कड़ सामी'', (हरिशरणानंद), ''वीर चन्द्रसिंह गढ़वाली'', ''कप्तान लाल'' (जसवंतचंद्र) । सव सँ महत्वपूर्ण जीवनी-रेखाचित्र सभक संग्रह अछि दू खंड मे—''नये भारत का नेता'' । एहि मे शेरे-कश्मीर शेख अब्दुल्ला, सर्वश्री कामरेड युसुफ, भारद्वाज, एस. जी. सरदेसाई, स्वामी सहजानंद, एस. ए. डांगे, कल्पनादत्त जोशी, बंकिम मुकर्जी, पी. सुंदरैया, के. केरलियन, आर. बी. भोरे, डा. गंगाधर अधिकारी, डा. के. एम. अशरफ, पूरनचन्द्र जोशी, एस. एस. वालटीवाला, मुहम्मद शाहीद, सैयद जमालुद्दीन, वुखारी, फज़्ल इलाही कुरवान, मुवारक सागर, डा. जेड. ए. अहमद, महमूदुज़्ज़फर, ''निराला'', पंत आदि क जीवनी सव, सव व्यक्ति सं साक्षात्कार कऽ कए, हुनक पारिवारिक वंश परंपरा, वाल्यावस्था, काजधाज, सामाजिक राजनैतिक संघर्ष आ घटना सभक विशद विवरण सहित प्रस्तुत कएल गेल अछि । भारत मे समाजवादी साम्यवादी विचार सभक इतिहास पर शोध काज करऽ वाला सभक लेल ई बहुत उपयोगी ग्रंथ थीक । दुर्भाग्यवश, बहुत वर्ष सं ई दुष्प्राप्य अछि, किएक त एकर पुर्नमुद्रण नहि भेल ।

राहुल हिंदी मे पहिल बेर लिखलन्हि चारि टा उत्तर जीवनी सब—''कार्लमार्क्स'', ''लेनिन'', स्तालिन'' आ ''माओ-त्से तुंग'' । १९५६ मे लिखल ३५७ पृष्ठ क माओत्से तुंग क भूमिका मे राहुल लिखने छलाह ''माओ एशिया क छथि, आ एशिया मे सेहो चीन, जकर भारत क संग सांस्कृतिक आदानप्रदान आ घनिष्ठता बहुत पुरान छैक । ई कहि सकैत छी जे दूनू क विचारधारा आ जीवन मे प्राचीन कालहि सँ बहुत घनिष्ठता रहल छैक । यद्यपि मार्क्सवाद क प्रयोग (व्यवहार) हरेक देश मे ओकर परिस्थिति क अनरूपे करऽ पड़ैत छैक, जे सब सँ कठिन काज छैक, ई कहबा क चाही जे मार्क्सवाद के अपन देश मे व्यवहत करबा क लेल मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्तालिन आ माओल्से तुंग एहन प्रतिभा सबक आवश्यकता अछि । सब देश मे क्रांति आ नवनिर्माण क शक्ति

सभ उपलब्ध छैक, समयो क़खनहु के भेटैत छैक, मुदा क्रांति क सफलता क लेल ओतऽ एहने महान प्रतिभा सभक आवश्यकता छैक । आवश्यकता छैक, त प्रतिभा अवश्ये जन्म लऽ कए रहतैक । हमर देश क लेल त माओ क जीवनी बड़ बेशी लाभदायक छैक'' ।

(माओ-त्से तुंग, भूमिका) (१६.७.५६) किताव महल, इलाहाबाद, १९७१)

एहि उद्धरण सँ ई स्पष्ट अछि जे राहुल खुजल दिमाग क मार्क्सवादी छलाह । ओ कखनहुं किछु तै नहि लिखलनि जे ककरो खुशामद करी अथवा ओहि सँ कोनो लाभ प्राप्त करी । वस्तुतः राहुल अपन समाजवाद पोथी सब सँ नहि जीवन सँ सिखलन्हि । ओ मात्र आरामकुर्सी पर पसरि कए सिद्धांत बघारऽ वाला अथवा ड्रांईगरूम मे बैसिक विद्वान बन वाला व्यक्ति नहि छलाह ।

हुनकर रचनात्मक साहित्य क एक टा बहुत बड़का हिस्सा हुनक विविध प्रकार क प्रवास वर्णन छन्हि । एहि तरह क हुनकर १३ टा पोथी—छन्हि :

१. ''मेरी लद्दाख यात्रा'' : एहि मे मेरठ सं पंजाब, मुलतान, डेरा गाजीखान, फ्रांटियर, पुंछ रियासत, कश्मीर, जोजिला दर्रा होइत लद्दाख धरि क वर्णन छैक । एहि मे लाहौर आ कुल्लू क वर्णन सेहो छैक । ई १९३९ मे लिखल गेल ।
२. ''लंका'' : एहि मे अनुराधापुर, पोलान्नामूरू, कोलम्बो क इतिहासवृत्त आ वर्णन अछि । ई ''राहुल-यात्रावली भाग—१'' मे पुनर्मुद्रित अछि ।
३. ''मेरी यूरोप यात्रा'' : १९३५ मे प्रकाशित एहि पोथी मे भदंत आनंद कौसल्यायन क संग कोलम्बो सँ लंदन, पेरिस, जर्मनी मे १९३२ मे कएल गेल यात्रा क वर्णन अछि ।
४. ''हमर तिब्बत यात्रा'' : १९३७ मे प्रकाशित । ल्हासा, चंग, साक्या, ग्नेनाम, नेपाल क डायरी सभक अंश अछि ।
५. ''यात्रा क पन्ना'' : १९३२ मे प्रकाशित । तिब्बत क तेसर यात्रा, राजस्थान यात्रा क किछु हिस्सा आ भदंत कौसल्यायन के लिखल पत्र सभ एहि मे छैक ।
६. ''जापान'' : सिंगापुर, हांगकांग, शांघाई, कोबे, तोक्यो, कोयासानक यात्रा क वर्णन ।
७. ''ईरान'' (दू खंड) : पहिल खंड मे प्राचीन फारस क इतिहास छैक, दोसर मे आधुनिक ईरान क यात्रा क वर्णन छैक । सोवियत रूस मे वाकू सँ लौटैत काल राहुल तेहरान, इल्पाहान आ शीराज़ गेल छलाह ।
८. ''रूस मे पच्चीस मास'' : बीकानेर सँ १९५२ मे प्रथम प्रकाशित १९६७ मे ''मेरी जीवन यात्रा'' (भाग ३) मे पुनर्मुद्रित ।
९. ''किन्नर देश मे'' : प्रयाग सँ १९४८ मे प्रकाशित । दोसर संस्करण इलाहाबाद सँ १९५६ मे प्रकाशित भेल छल । हिमाचल प्रदेश मे किन्नौर क यात्रा क वर्णन छल एहि मे ।

१०. "तिब्बत में सवा वर्ष" : दिल्ली सं १९३३ मे प्रथम प्रकाशित । "राहुल यात्रावली (भाग-१) मे पुनर्मुद्रित ।

११. "घुमक्कड़ शास्त्र" : घुमक्कड़ लोकनिक लेल अत्यंत मनोरंजक निर्देशिका ।

१२. "एशिया के दुर्गम भू-खण्ड मे" : दोसर तिब्बत यात्रा क वर्णन ।

१३. "चीन में क्या देखा?" : नव चीन क १९५८ क यात्रा क उत्साहपूर्ण वर्णन ।

एकर अतिरिक्त हिमालय पर लिखल गेल एकटा पूर्ण पुस्तक-माला छैक, जाहि मे दार्जिलिंग, कुमायूं, गढ़वाल, जौनसार, नेपाल, हिमाचल प्रदेश पर अलग-अलग विस्तृत वर्णन अछि । "सोवियत मध्यप्रदेश" आ "सोवियत भूमि" पर हुनकर दू टा पैघ किताव सब मे सेहो जानकारी देल गेल अछि ।

साहित्यिक महत्व क ओहि अन्य ग्रंथ मे इतिहास विषयक रचना सब छैक । "मध्य एशिया क इतिहास" एक वृहदाकार दू खंड मे ग्रंथ अछि, जकरा साहित्य अकादमी पुरस्कृत कैने अछि । एकर उल्लेख पहिनहु भऽ चुकल अछि । हुनकर अन्य इतिहास परक ग्रंथ सब छन्हि : "ऋग्वैदिक आर्य" : "अकबर" आ फाउंडर्स ऑफ ब्रिटिश रूल इन इंडिया" क अनुवाद हिन्दी मे एतेक मौलिक नहि अछि, परंतु "पुरातत्व निवंधावलि" मे बहुत मौलिक महत्वपूर्ण निबंध संग्रहीत अछि ।

हिंदी साहित्य क प्रारंभिक इतिहास पर राहुल नब प्रकाश देलन्हि, संस्कत आ पालि क दू काव्य-संग्रह संकलित कऽ कए (जाहि मे पालि काव्य संग्रह एखनहुं अप्रकाशित अछि) राहुल अपन जीवन क अंतिम काल मे एक एहन त्रिखंडात्मक काव्य संग्रह तैयार कऽ रहल छलाह जे पारंपरिक भइयो कए अपौराणिक होइत आ जकरा आधुनिक पाठक कविता क रूप मे आनंद सँ पढ़त । ई काज ओ हिन्दी काव्य धारा मे अपभ्रंश कविता क संकलन सँ प्रारंभ कयलनि ।

एहि ग्रंथ मे पुरान हिन्दी कविता क संवंध सिद्ध आ नाथ सभक पद सब पर आ सूत्र सब पर वान्हल अटपट वाणी सँ जोइल गेल । एहि मे (सरहपा (द), कान्हपा (द), डोम्बि-पा इत्यादि प्राचीनतम कवि लोकनिक रचना सभ छैक जे एक हजार बरस पहिने जानि बूझि कए जाति पांति क जकड़बंदी के तोड़लनि आ कर्मकांड क विरोध कयलन्हि । ई सब बाद क शती सब मे कबीर, दादू, रैदास, नामदेव आदि जे विद्रोही, अप्रतिवद्ध कवि भेलाह, हुनकर पूर्ववर्त्ती छलाह । अब्दुर्रहमान आ पुष्पदंतक प्रकृति आ मानव संबंध सभक सुंदर वर्णन मै, हाल क "गाथासप्तशती" क काव्य रचना क सूत्र पाओल जाइछ । राहुल स्वयंभूक जैन-रामायण पर एक टा लेख लिखलन्हि अछि जाहि सँ पता चलैछ जे तुलसीदास जे दोहा-चौपाई क प्रबंध पद्धति अपनौलनि ओकर आधार कतऽ छल । राहुलक "दोहाकोश" क प्रस्तावना बहुत महत्वपूर्ण शोध-निबंध छलन्हि ।

ओहि तरह क काज ओ "कुतुब मुकतरी" आदि दक्षिण क ग्रंथ क विषय मे कैने छथि ओहि ग्रंथ क नाम छैक "दकिखनी काव्यधारा" । एकर आओर एकटा विद्वतापूर्ण भूमिका मे राहुल प्रतिपादित कयलन्हि जे न मात्रा भाषा, अपितु विचार-वस्तु मे सेहो

दक्षिण क मुसलमान संत सभक एहि रचना सभ मे कतेक भारतीय विंब कोना अपनाओल गेल अछि, आ सूफी कविता के स्थानीय लोक-कविता क कल्पना बंध सभक संग कोना एकाकार कएल जाय । एहि ऐतिहासिक महत्व क मौलिक साहित्यिक पुनर्चिंतन क कार्य क मात्र एकहि खंड प्रकाशित भऽ सकल । ई सब राहुल क हिंदी-साहित्य-इतिहास के देल गेल अवदान छन्हि ।

सोवियत रूस सँ अंतिम वेर लौटला पर आ सदरूद्दीन ऐनी क किताब सभक हिंदी अनुवाद कैलाक बाद राहुल, मातृभाषा सभक आधार पर, हिंदी प्रदेश क मानचित्र क पुनरांकन पर अपन विचार व्यक्त कयलन्हि । ओ ई मानै त छलाह जे भोजपुरी, मैथिली, ब्रज, अवधी, बुंदेलखंडी, मालवी, राजस्थानी इत्यादि प्राथमिक शिक्षा क माध्यम बनय । ओ विश्वास करैत छलाह जे प्रभावशाली बनबाक लेल लिखित खड़ी बोली (जेकरा हिंदी कहै छैक) के बोल चाल क भाषा क बहुत निकट होयबा क चाही । भोजपुरी मे ओ आठ टा नाटिका सेहो लिखलन्हि ।

तैं ओ ''भागू नहिं, दुनिया के बदलू'' मे कठिन संस्कृत आ फारसी शब्द सभ सँ बचि कए पूरा किताब लिखलन्हि, कारण ओ कृत्रिम हिंदुस्तानी क मजाक सेहो उड़बैत छलाह, किएक त ओ मानैत छलाह जे ओहि मे महान् साहित्य क रचना संभव नहि छैक । (''सुमित्रानंदन पंत या इकबाल क कविता लियह । ई हिन्दुस्तानी मे कोना लिखल जा सकैछ'' आत्मकथा भाग २ मे ओ पूछैत छथि) ''मुदा जन साधारण मे किसान सब मे काज करैत ओ एहि सिद्धांत परपहुँचलाह जे भाषा के जौ जनता धरि पहुंचयबा क हो त ओ काज कोश सभ नकली भाषा क आधार पर नहि, मुदा लोक व्यवहार क भाषा सँ भऽ सकैत अछि । ओ डा. रघुवीर क कृत्रिम, क्लिष्ट, संस्कृतनिष्ठ शब्द निर्माण क आलोचना कएने छथि ।

''शासन-शब्दकोश'' (विद्यानिवास मिश्र आ प्रस्तुत लेखक द्वारा राहुल क सहयोग सँ संपादित, आ हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग सँ १९४८ मे प्रकाशित (क भूमिका मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन क सभापति क रूप मे राहुल एक कोश निर्माण क नीति देलन्हि ।

एहि कोश मे मूल अंग्रेजी शब्द क बाद, दोसर कॉलम मे, जतबा प्रचलित प्रति-शब्द, हिंदी शब्दकोश सभ सँ उपलब्ध छल, जाहि मे डा. रघुवीर क विचित्र नव शब्द सेहो छल, ओ सब देल गेल छल, मुदा पहिल कॉलम मे राहुल अपन पसिन्न क, अर्थात बेशी उपयुक्त शब्द देने छथि, जाहि मे सरलतर आ बेशी प्रचलित शब्द देल गेल अछि, जेना अंग्रेजी ''एकेडेमी'' क हिंदी पर्याय ''अकादेमी'' देल गेल, आदि ।

राहुल के लोकगीत, लोकसभा आ लोकनाट्य बहुत प्रिय छलन्हि । ओ भोजपुरी लोकगायक बिसराम पर एक टा लेख लिखने छलाह । बिसराम छोटे बयस मे मरि गेल छलाह, हुनकर गीत सब एक टा पुस्तक मे ओ संकलित कऽ कए छपौने छलाह । ओहो तरहे बुंदेलखंडी लोककवि ईसुरी पर सहो ओ लिखने छथि । ओ डा० राजेन्द्र प्रसाद सँ भोजपुरी मे आ डा. अमरनाथ झा सँ मैथिली मे गप्प करैत छलाह । नैनीताल मे ''सिल्वर

ओक'' मे अपन आवास क लग रहऽ वाली एक टा वृद्धा क मुँह सं सुनि कए, ओकरा नोट क के, राहुल ''आदि हिंदी की कहानियां और गीतें पोथी लिखलन्हि । हुनकर मंतव्य छलन्हि जे आधुनिक खड़ी बोली हिंदी क माय आगरा-मेरठ मे वाजऽ जाय वाला कौरवी छैक । एहि लोकगीत सब आ लोककथा सब पर हरियाणवी मे व्रज क प्रभाव छैक, ओहिना कतेको उर्दूक प्रयोग सेहो छैक ।

राहुल हिंदी के राष्ट्रभाषा मानैत छलाह आ एहि वात क कट्टर समर्थक छलाह । तैयो ओ संकीर्ण आ अंध राष्ट्रवादी नहि छलाह । ओ मानैत छलाह जे हिंदी क संग-संग ओकर सव उपभाषा सव (या मातृभाषा सव जेना ओ सव ओकरा कहैत छथि) जेना अवधि, भोजपुरी, व्रज, मैथिली, राजस्थानी इत्यादि एतवा विकसित हो जे प्राथमिक शिक्षा ओहि ''भाषा सव'' के माध्यम सँ देल जा सकय । ई ''मातृभाषा सभ'' पर आग्रह, हुनक आलोचक सव द्वारा हिंदी क विखंडन क रूप मे देखल गेल । ओ सव कहऽ लगलाह जे भारत मे ई सोवियत पद्धत्ति के अपनावै वला वात जेकां छैक । पछिला महायुद्ध क समय ओ स्वयं भोजपुरी मे किछु एकांकी लिखलन्हि । ई सव वात तीस साल पुरान अछि, जखन मैथिली, राजस्थानी, नेपाली इत्यादि भाषा के साहित्यिक मान्यता देवाक प्रश्न सोचलो नहि जा सकैछल अथवा ओकर मात्र चर्चे टा होइछल । वाद मे साहित्य अकादमी एहि भाषा के मान्यता दऽ देलक । एहि प्रकारे भाषिक अल्पसंख्यक सव के सुरक्षा देवा आ ओकर पक्ष मे लड़ऽवाला राहुल सव सँ पहिल अग्रणी छलाह । मुदा, दुर्भाग्यवश, १९४८ मे, वम्वई, में हिन्द साहित्य सम्मेलन क अधिवेशन मे उर्दू क लेल देवनागरी लिपि स्वीकार करयवाक जोरदार अपील, हुनकर विरोध मे कटु विवाद शुरू कऽ देलक आ किछु उर्दूभाषी कम्युनिष्ट लोकनि राहुल के कम्युनिस्ट पार्टी सं निष्कापित करवाक अभियान मे सफल भेलाह ।

राहुल एक टा आर अग्रणी काज, एहि दिशा मे कयलन्हि । हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहावाद सँ प्रकाशित वृहद हिंदी साहित्य क इतिहास क एक टा पूरा खंड ''उपभाषा सभक साहित्य के लऽ कए ओ संपादित कयलनि । एहि ''मातृभाषा सभ क एक एक टा विद्वान द्वारा एहि भाषा सभ पर आ ओकर साहित्य पर एक एक टा विस्तृत लेख ओहि में लिखवाओल गेलैक—भोजपुरी, मैथिली, मगही, अवधी, व्रज, वुंदेलखंडी, राजस्थानी, मालवी, निमाडी आ हिमाचल प्रदेश क कतेको पहाड़ी उपभाषा सभ पर । राहुल के केवल एतवय एकटा काजक लेल राष्ट्रीय सम्मान भेटवाक चाही छलन्हि — परंतु ''पदमभूषण'' हुनकर जीवन क संध्याकाल मे आएल छलन्हि, जखन ओकर मूल्य हुनका लेल किछु नहि छलन्हि—ता धरि हुनकर स्मृति हुनका छोड़ि चुकल छलन्हि ।

साहित्य के योगदान

राहुल क व्यक्तित्व आ उपलब्धि सव बहुमुखी आ विविध प्रकार क छलन्हि । तै हुनक राजनैतिक लेखन आ भाषा-संबंधी विचार वा सामाजिक क्रांतिकारिता (ओ एकटा सार्वजनिक सभा मे'' हिंदु सव के गोमांस खेवाक चाही'' एहन वात प्रतिपादित कयलनि आ सनातन हिन्दू विश्वास वाला समाज हुनका पर पाथर बरसौलक इत्यादि विवाद विषय सभ पर लिखवा क तुलना मे हिन्दी साहित्य कें हुनक की योगदान छलनि, एही बात धरि अपना के सीमित राखी त नीक हैत । एहि अध्याय मे हुनकर विचार-वस्तु आ शैली क किछु झलकी सेहो हुनके किछु रचनाक उद्धरण द्वारा देल जाए । विपरीत आ भिन्न दिशा मे प्रेरित दू परस्पर विरोधी वात क संतुलन आ समन्वय हुनकर विचार सब आ जीवन पद्धति मे सव ठाम देखवा मे अवैछ । हालांकि हुनकर मानसिक संस्कार परंपरावादी ब्राह्मण-वंशक छल, ओकर पूर्ति ओ वौद्ध धर्म क प्रति गहीड़ आस्था क रूप मे कयलन्हि । सनातन वहुदेववाद क प्रतिवाद आर्यसमाजी मूर्ति पूजा विरोध आ वेद सभक अंतिम ग्रंथ-प्रमाण्व क द्वारा कयलन्हि । वाद मे ओकरो ओ छोड़ि देलन्हि । ओ संस्कृत आ अरवी पंडित आ मौलवी सव सँ सीखलनि एवं पालि भारत, श्रीलंका, नेपाल, तिव्वत क वौद्ध भिक्षु सव सँ, तैयो ओ अपन मोन के मुक्त रखलन्हि—प्राचीन व्याकरण सव आ सूत्रकार सभक सांच हुनक मोन के पूर्ण रूपेण वान्हि नहि सकल । दोसर दिसि, ओ सादा ''अपभ्रंश'' भाषा सभक, अनपढ़ किसान-मजदूर सभक टूटल-फूटल जनभाषा क सदिखन समर्थन करैत रहलाह । ओ स्वेच्छापूर्वक अपना के वेगहीन वनवैत रहलाह । एकटा जवर्दस्त व्यक्तित्व जे छोटे वएस सँ सब पारिवारिक वंधन तोड़ि देने हो, ओ ''सर्वहारा क अधिनायकवाद'' जकाँ नव विचारधारा क प्रचारक ओ प्रमुख उग्दाता वनलाह । रूस मे ''सोलखोज'' आ चीन मे ''कम्यूनसव'' के देखि कए ओ अत्यंत आनंदविभोर भऽ ओकर मुखर प्रशंसा करैत छथि । ओ ओतवय तीव्रता सँ मठ आ विहार सभक साधु सभक गुप्त आ खुजल संगठन सभक, लामासभक एकछत्र धर्मराज्य-शासन क आलोचना आ निंदा करैत छथि । सामान्य रूढ़ि अर्थ सभ मे ओ धार्मिक नहि छलाह मुदा हुनकर भीतर कतहु एक टा गहीर निष्ठा आ भारतीय सांस्कृतिक मूल्य क प्रति उत्कट प्रेम छलन्हि । भारत मे एक राष्ट्रभाषा क आग्रह मे ओ १९४८ मे तखनुक कम्युनिस्ट पार्टी क भाषा नीति सँ अफना कें अलग कए लेलनि । एतय हम एक दिसि राहुल आ दोसर दिस सज्जाद जहीर आ डा० रामविलास शर्मा जे भाषा संवंधी सैद्धान्तिक रूख के अपनौलनि ओकर गुणावगुण सभक चर्चा मे नहि पड़ऽ चाहैत

छी । एतय मात्र इएह सुझाओल जा सकैछ जे राहुल क चिर अशांत आत्मा मे ई जे निरंतर अंतर्द्वंद्व चलैत रहल छल, ओ हुनकर हिन्दी लेखन के एक टा विलक्षण विशेषता अथवा गुण प्रदान कयलकन्हि ।

दैनिक डायरी-लेखन मे ओ अत्यंत सरल आ जिज्ञासु छलाह । आत्मकथा लिखैत काल एहि डायरी सभक ओ बहुत आधार लेलन्हि । एहि लेखन मे एक तरह क द्विविध दृष्टि देखवा मे अवैछ । राहुल जे भोक्ता छथि ओ साक्षी राहुल सँ भिन्न छथि । एक दिसि व्यवस्थित शिक्षण क अभाव क पूर्ति ओ एतवा तरहे आ एतवा वेशी जानकारी-सब विषय आ वस्तुक, सब ज्ञान-विज्ञान क शाखा-प्रशाखा क—जमा करऽ चाहैत छथि जे एक मनुक्ख क लेल असंभव छैक । जखन ओ अपन एहि बौद्धिक आयास मे आनंद लैत रहैत छथि, ओतहि ओकरे संग-संगअचेतन भाव सँ ओ हिमालय क सीमा पर एक टा विराट दृश्यक निरीक्षण करबाक लेल आ ओकर वर्णन करवा क लेल थमैत छथि; वा फेर अपन संपूर्ण संचित भावना सब कोनो शोषिता ग्रामीण नारी क दशा पर दया देखयवा क लेल दैत छथि, अथवा कौखन के हास्य-भरल नर्मविनोद सँ तथा कथित "प्रतिष्ठा प्राप्त" पैघ-पैघ लोक क पोल खोलैत छथि, हुनका लोकनिक अनाचार पर टीका-टिप्पणी करैत छथि । हुनकर शैली विषम अछि मुदा पाठक के कतहु साहित्यिक छटाक अभाव सँ चिंतित नहि होइत अछि, किएक त प्रत्येक क्षण पर ओकर साक्षात्कार कोनो बहुत चौंका देब वाला, धक्का देब वाला नव अनुभव स होइत अछि— एक टा एहन कल्पना अथवा वर्णन क अभूतपूर्व अनुभूत चमत्कृति सँ ओ आविभूत भऽ जाइत छथि । सामान्य-पाठक क कल्पना-शक्ति, ओना, सब समय गुदगुदाओल जाइत छैक, राहुल पन्ना क पन्ना नव ज्ञान क जानकारी के दैत चलैत छथि । दोसर संदर्भ मे, एहन जानकारी एकदम नीरस वाचन सिद्ध होइछ । पाठक राहुल के सांस्कृतिक नृवंश-शास्त्र, पुरातत्व, समाजशास्त्र, धर्म-शास्त्र, भाषा-शास्त्र, अथवा साहित्यिक खोज क नव-नव आयाम में सहभागी भेल जाइत अछि । एक टा अज्ञात प्रदेश आ क्षेत्र क एहि अनंत यात्रा मे, एहि ज्ञान क खोज मे, मानवी प्रयत्न सभक एहि उत्खनन मे पाठक राहुल क साक्षित्व आ सहानुभाव प्राप्त करैत जाइत छथि । व्यर्थता वा उदासी क भाव ओकरा पर कखनहु व्याप्त नहि होइछ । किएक त राहुल क लेखन मे ओ शक्ति छैक जे ओ सामान्य अनुभव मे सेहो किछु असामान्य देखवा मे लगैछ आ ई शोध-प्रक्रिया एतेक आकर्षक आ प्रायः संक्रामक होइत छैक । राहुल बूझू अंग्रेजी कवि कीट्स क घुमक्कड़ी के अपन दर्शन बनौने छथि—"कल्पने तो नित्य भटकल कर, सुख छैक नहि घर मे, न अटकलकर" घुमक्कड़ शास्त्र मे ओ रोमांटिक पलायनबादी क समर्थन नहि करैत छथि, अनासक्ति क बाजाबता एक टा कार्यक्रम बना दैत छथि आ संगहि एहि जीवनरूपी खूजल पोथी क प्रत्येक अक्षर ध्यानपूर्वक पढ़ैत जेबा क आदेश दैत छथि । हुनकर बाल्यावस्थहि सँ साधु क रूप मे उमेदवारी, हुनकर आर्य मोसापिरी आ बाद मे किसान सभाक राजनीति मे सक्रिय भाग लेनाई, तिब्बत आ सोवियत रूस एहन (दू टा एकदम परस्पर विरोधी) देश सभ क यात्रा सभ, हुनका एकटा

आदर्श घुमक्कड़ बना दैत अछि ।

जाहि व्यक्ति सबके ओ पसिन्न करैत छथि, जकर प्रशंसा-भरल जीवन-चरित्र रेखा सब ओ अंकित कयलनि, एहन विशेषता बेर-बेर अबैत अछि, जेना ''घुमक्कड़राज'' नरेन्द्रयश अथवा घुमक्कड़ भट्ट दिवाकर, अथवा महापर्यटक किंथुप, अथवा ''पर्यटक'' नैनसिंह'', फक्कड़ बाबा इत्यादि ओ यात्री, स्वामी, भिक्षु, भदंत, महंत, परिव्राजक, ब्रह्मचारी बाबा लोग पसिन्न करैत छथि । ''अतीत से वर्तमान'' ओ ''जिनका मैं कृतज्ञ'' नामक दूनूटा पोथी मे मात्र साधुए टा नहि, विद्वानो छथि, कतेको धर्म आ विश्वास वाला महापुरुष छथि—हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, ईसाई, सिक्ख आ नास्तिक सेहो । एहि पोथी सब मे सँ चारि टा उद्धरण हुनकर मोन क परिचय दऽ देत ।

आचार्य नरेन्द्र देव

''नरेन्द्र देव जी बुद्धिवादी छलाह आ आखिर धरि बुद्धिवादी रहलाह । कतेको गोटे क ऊपर बुढ़ारी मे दोसर रंग चढ़ल, मुदा हुनका ऊपर कहियो नहि । पंथाई लोकनि पर व्यंग्य करैत एक टा गोष्ठी बना कए ओहो एकटा पंथ स्थापित कयने छलाह, जकर नाम रखलनि ''चोंच पंथ'' । ''चोंच पंथ क पैगम्बर आचार्य जी छलाह मुदा एहि पंथ मे पैगम्बर आ अनुयायी लोकनि मे सौ-पचास गज क दूरी कें पूछी दूइयो इंच क दूरी आ अन्तर नहि रहैत छलैक । सब संगतुरिया आ समव्यस्क छल । जखन कखनहुं ओ सब गोटे क भेंट होइत छलन्हि, त दहिना हाथ क आंगुर आ तरहत्थी के चोंच जकां बना कए ''जय चोंच भगवान'' कहि एक दोसरा क परस्पर अभिवादन करैत छलाह । आचार्य नरेन्द्र देव विद्वान गंभीर चिन्तक, विनोदी होमऽ क संग-संग आदर्शवादी छलाह । ओ समाजवाद मे गंभीर आस्था रखैत छलाह । मार्क्स हुनकाबहुत प्रभावित कयलखीन्ह आ सदिखन ओ मार्क्सवादी समाजवादी रहलाह । एहि मे हम दूनू गोटे सहमत छलहुँ । हालांकि हमरा साम्यवाद आकृष्ट कएलक आ ओ समाजवादी छलाह । दुनू पार्टी सभक संबंध नीक नहि छलैक, तथापि हमर वैयक्तिक सम्बन्ध मे कोनो अन्तर नहि आएल ।.....नोन सत्याग्रह क समय मे हम काशी विद्यापीठ मे छलहुँ । निर्णय भेल, जे मार्क्स क ''कम्युनिस्टी घोषणा'' क हिन्दी मे अनुवाद कएल जाय । दूनू मीलि कए अनुवाद कएल । हुनकर किछु फार्म प्रेमचन्द्र जी क प्रेस मे छपलन्हि सेहो.....''

(जिनका मैं कृतज्ञ : पृ. १८३-१८४)

साथी महमूद

''यद्यपि महमूद क सुगठित शरीर के देखला सँ रौबवाला पठान क प्रभाव मनुक्ख क ऊपर पड़ैछ, तैयो हुनकर केशहीन मुँह पर सर्वदा निराजल मीठ मुस्कान हुनका दोसरे रूप मे प्रस्तुत करैत अछि ।.....हम पहिले-पहिल महमूद के देवली कैंप जेल मे देखनें छलियन्हि । ओ बेशी बाजऽ वाला नहि छलाह, अथवा ई कही जे काजे पड़ला पर

हुनकर मुँह खुजैत छलन्हि । लेखनी मे शक्ति छलन्हि, मुदा तकरो उपयोग ओ वड़ संयम क संग करैत छलाह—देवली कैंप मे रहैत पोथी लिखवा क लेल हमरा किछु एहनो पोथी सभक आवश्यकता पड़ल, जे पैघ-पैघ पुस्तकालय सब मे सेहो दुर्लभ छल । महमूद ओकरा पढ़ि चुकल छलाह आ ओ पोथी सब हमरा उपलब्ध करौलन्हि । महमूद अत्यन्त दयालु आ विशाल हृदय वाला छलाह । ओ सर्वथा भद्र छलाह । चारू दिस हुनकर भलमनसाहत आ भद्रता वरसैत छलन्हि । ओ कम्युनिस्ट छलाह, कम्युनिस्ट क जेहन रूखल-सूखल छवि लोक लग मे राखल जाइछ, ओकरा देखि कए ककरो विश्वासो नहि करैत जे कम्युनिस्ट एहन भऽ सकैछ . आ जौं कम्युनिस्ट एहन भऽ सकैछ त मधुर स्वभाव क दोसर आदमी केहन हेतैक ? कतेको काल धरि ओ पं. जवाहरलाल क प्राइवेट सेक्रेटरी रहलाह । मान-सम्मान, प्रभुता-वैभव, हुनका अपना दिसि आकर्पित नहि कऽ सकैत छल । जतऽ अपन आदर्श आ सिद्धांत क प्रश्न अवैत छल ओतऽ ओ कनियो झुकवा लय तैयार नहि छलाह ।

अकादेमीशियन बरानिनकोव

(शिक्षाशास्त्री बरानिनकोव)

"अलेक्सी पेत्रोविच वरान्निकोव के भारत क लोग ओतेक नहि जनैत अछि, जतना कि जनवा क चाही । लल्लूलाल जी क "प्रेमसागर" आ तुलसी क "रामचरितमानस" क ओ रूसी भाषा मे अति सुन्दर अनुवाद कयने छथि । तुलसीकृत रामायण क अनुवाद मे मात्र अपन विद्वत्तेटाक नहि, अपितु श्रद्धा क सेहो ओ विशेष परिचय देने छथि । ओ तुलसी क अमर काव्य के पद्यावद्ध करैत ईहो प्रयास कयलन्हि जे चौपाई, दोहा आ दोसर पद्य ओतवय अक्षर वाला रूसी छंद सव मे अनुवादित कयल जाए । जाहि समय पोथी प्रेस मे छलैक आ ओकरा लेल चित्र सभक चयन भऽ रहल छलैक ओहि समय एहि पंक्तिसभक लेखक सेहो लेनिनग्राद मे छलाह, आ अनेको बेर दोसर वात सभक संबंध मे हमरा लोकनिक गप्प शप्प होइत छल । ता ओहि समय मे भारत क संग रूस क राजनैतिक, संवंध स्थापित नहि भेल छल, एहि कारणे हमरा लोकनि सँ हुनका ओतेक मददियो नहि भेटि सकैत छलन्हि । जखन एक-दू टा रामायण क पुरान सचित्र प्रतिक विषय मे ज्ञात भेल, त वरान्निकोव वहुत प्रयास कयलन्हि जे रूसी अनुवाद मे वैह चित्र सभ देल जाइक । काशी नागरी प्रचारिणी सभा एहि विषय मे हुनकर सहायता कयने छल, जकरा लेल ओ वेस कृतज्ञ छलाह । ओ बड़का भाषाविद् छलाह । ओ हमरा वतौलनि जे सीगान (जिप्सी) रोमनी-डोमनी भाषा बजैत छल आ ओ सभ भारत सँ आएल छल ।"

(अतीत से वर्तमान : पृ. ९४-१०२)

नेपाली महाकवि देवकोटा

"जनवरी १९५३ मे हम पांचम वेर नेपाल गेलहुं । आ हमर स्वागत करैत काल' "विदेशी अतिथि" शब्द प्रयुक्त कएल गेल । हम ओकरा विदेश नहि मानि सकैत छी । ओही हिमालय क वरपुत्र हमर पंत छथि, जकर दोसर श्रेष्ठ पुत्र महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा छथि । महाकवि देवकोटा मे हम नेपाली क "पंत-प्रसाद-निराला" के पूर्ण रूप सँ पवैत छियन्हि । "निराला" क किछु आओर गुण सेहो हुनका मे विद्यमान छन्हि यद्यपि ओतेक मात्रा मे नहि । असाधारण प्रतिभा कौखन के पागलपन क सीमा रेखा के मेटवैत देखवा मे अवैछ, वेह बात देवकोटा क विषय मे सेहो छैक । ओ नेपाली आ अंग्रेजी मे, सव मिला कए, आई ४४ वर्ष क आयु मे ८० टा पोथी सब लिखलनि, जाहि मे २६ टा हेरा गेलैक वा फाड़िदेल गेलैक । १९३४ मे हुनकर गरीब नामक पहिल कविता प्रकाशित भेलैक । ओही वर्ष ओ "मुनामदन" ग्राम खंडकाव्य लिखलनि । एहि खंडकाव्य मे प्राकृतिक दृश्य सभक आ नायक क तिब्बत यात्रा क सुंदर वर्णन छैक । ओ कविता सब, कहानी, नाटक आ निवंध सब लिखलनि । ओ भाषा क जादूगर छलाह । अपन भाषाक ओ कतेको नव शब्द सब सँ समृद्ध कयलन्हि ।"

(अतीत से वर्तमान : पृ. १०५-११८)

राहुल क अनेको साहित्यिक जे लेख सव पोथी क ग्रंथ सब मे यत्र तत्र छिड़िपाएल अछि ओकर एकटा संग्रह राहुल निबंधावली (साहित्य) १९७० मे प्रकाशित भेल । ओहि मे ओ लेख सब छैक जेना—"हम कथा लेखक कोना भेलहुँ", "प्रेमचंद-एक संस्मरण" "भारतेन्दु आ पुश्किन", "लोकगीत आ रेडियो", "ऐतिहासिक उपन्यास", "मारवाड़ी आ पहाड़ी बोलीक बीच सम्बन्ध", "चौरासी सिद्ध", "स्वयंभू" आ "आचार्य रघुवीर क तकनीकी शब्दमाला क व्युतप्ति" । एहि मे पहिल लेख मे ओ स्वीकार करैत छथि जे हुनका यात्री आ प्रवचनकर्त्ता भेनाई पसिन्न छन्हि । "यात्री लोकनि यात्रा क विषय मे पूछिते छलाह आ सव यात्री श्रोता लोकनि क जिज्ञासा क पूरा करवा क लेल किछु कहितो छलाह । १९१५ मे हम आगरा मे छलहुँ । ओतऽ हम उपनिदेशक बनबाक लेल गेल छलहुँ—ओतऽ सँ एकटा उर्दू अखवार बहिरावैत छलैक, ओहि मे खंडन-मंडन क रूप मे आर्यसमाजी ढंग क कोनो लेख पहिले-पहिल हमरा लिखबा क लेल कहल गेल छल ।..... १९१५ ईस्वीये मे हम पहिल हिन्दी लेख लिखलहुँ जे आधा कथा आ आधा यात्रा क रूप मे छल, बेशी यात्राए वर्णन जकाँ । सैंतीस वर्ष भऽ गेल आ ओकर वाद हम ओहि लेख के नहि देखि पयलहुँ ! ..... १९२१ मे असहयोग आन्दोलन मे एवं राजनीतिक क्षेत्र मे हम काज करऽ लगलहुँ । १९२१ क अंत मे हमरा सजाए भेल आ छौ मासक लेल जहल चल गेलहुँ । १९१८-१९ मे रूसी क्रांति क जे समाचार निकलैत छल, ओहि मे कल्पना क नोन मरचाई लगा कए हम अपना मोन मे एकटा साम्यवादी दुनिया क सृष्टि कऽ लेने छलहुं । ..... एहि प्रकारे संस्कृत पद्यबद्ध कथा लिखबा क

काज प्रारंभ कएल.....वक्सरक पहिल जेल यात्रा मे जाहि कथा क हम संस्कृत-काव्य क पांच सर्ग धरि पहुंचाय चुकल छलहुँ, आव ओकरा वेकार वूझि ओकरा स्थान पर हम ''वाईसवीं सदी'' लिखलहुँ । जेल मे हम चारिटा अंग्रेजी उपन्यास क भावानुवादक के भौगोलिक आ वैयक्तिक स्तर सँ ओकर वहुत किछु भारतीयकरण कऽ देलियैक । .... १९३५ मे किछु वास्तविक घटना सभके लऽ कए कहानी लिखवा क इच्छा भेल आ एक-एक कऽ कए हम ओ कहानी सब के लिखलहुँ जे ''सतमी के वच्चे'' मे संग्रहीत अछि ।...... १९३८ मे हम ''जीने के लिए'' नामक अपन पहिल उपन्यास लिखलहुँ ।.........१९४१ अथवा ४२ मे श्री भगवतशरण उपाध्याय क किछु ऐतिहासिक कथा सव हम देखलहुँ । जौं भगवतशरण जी एहन ऐतिहासिक कथा सभके लिखि कए प्रकाशित करवा लितथि, त प्राय: ''वोलगा सं गंगा'' लिखवा मे हम हाथ नहिं लगैवतहुँ ।.....१९४२ ई. मे हजारीवाग जेल मे रहैत हम ''वोलगा से गंगा'' क वीस टा खिस्सा लिख लेलहुं ।.........हम अपन कथा सभ मे केकरा सव सँ नीक वुझैत छी ई वतौनाई वहुत कठिन अछि । ''वोलगा से गंगा'' क कथा ''प्रभा'' के श्रेष्ठ कहैत पहिने हम दोसरा के सुनलहुं, आ सुनि-सुनि कए हमरो ओकरा विषय मे वैह धारण भऽ गेल अछि, नहि त ओहि संग्रह क ''नागदत्त'', ''प्रभा'' आ ''सुरैया'' एहि तीनू मे हम कम्मे अन्तर मानैत छी ।''

(राहुल निवन्धावली पृ. ३-५)

''वोलगा से गंगा'' कथा-साहित्य मे राहुल क कीर्तिमान अछि । वरस वरस सँ एकरा हिन्दी मे प्रगतिशील साहित्य क एकटा मील क पाथर मानल गेल अछि । प्राचीनतावादी आ पुनरूत्थानवादी आलोचक लोकनि भारतीय इतिहास क तथ्यके अपना मोने सँ तोड़-मरोड़ पर वहुत आपत्ति कयलन्हि । मार्क्सवादी एकरा ऐतिहासिक आ द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पर आधारित नव स्पष्टीकरण बतबैत छथि । एतय एहि पोथी क विस्तृत विवरण देनाई उचित नहि हेत । वास्तव मे ई एक इतिहास ग्रंथ थीक जे कथात्मक रूप मे लिखल गेल अछि । प्रथम संस्करण क भूमिका मे २३.६.१९४२ मे ओ लिखने छथि :

''मनुक्ख आई जतऽ अछि, ओतऽ आरंभ मे नहि पहुँच गेल छल, एकरा लेल ओकरा पैघ-पैघ संघर्ष सँ गुजरऽ पड़ल छलैक । मानव-समाज क प्रगति क सैद्धान्तिक विवेचन हम अपन ग्रन्थ ''मानव-समाज'' मे कयने छी । एकर सरल चित्रण सेहो कएल जा सकैछ आ ओहि सँ प्रगति वुझवा मे सेहो आसानी भऽ सकैछ इएह विचार हमरा ''वोलगा सँ गंगा'' लिखबा क लेल प्रेरित कएलक । हम एतय हिंदी यूरोपीय जाति क नेने छी जाहि सँ भारतीय पाठक लोकनि के सुविधा होइतन्हि । मिश्री, सुरियानी अथा सिन्धु जाति, विकास मे, हिन्दी-यूरोपीय जाति सँ सहस्राविद पहिनहि अग्रसर भेल छल । मुदा ओकरा अपना लेला पर लेखक आ पाठक दूनू के कठिनता बढ़ि जइतैक ।

हम सब काल क समाज के प्रामाणिक ढंग सँ चित्रित करबाक प्रयास कयने छी, मुदा एहन प्राथमिक प्रयत्न मे गलती होएब स्वाभाविक छैक । जौं हमर प्रयत्न आगो

क लेखक सब के बेशी शुद्ध चित्रण करबा मे सहायता कएलक त हम अपना के कृतकार्य बुझब ।

''बंधुल-मल्ल'' (बुद्ध) क काल पर हम एक टा स्वतन्त्र उपन्यास ''सिंह सेनापति'' लिखने छी ।''

एहि पुस्तक क आधार-फलक अछि भारतीय इतिहास क आठ हजार बरख क अज्ञात अन्हार प्राचीनतम काल सँ १९४२ धरि । पहिल चारि कथा प्रागैतिहासिक कालखंड सँ संबद्ध अछि: ''निशा'', ''दिवा'', ''अमृताश्व'' आ ''पुरूदूत'' ईसा-पूर्व ६००० सं २६०० ई. धरि क कथा अछि । भदंत आनंद कौसल्यायन एहि पोथी क प्रशंसा मे लिखने छथि—'' ''यद्यपि एहि कथा सभक पुनर्रचना मे कल्पना क मददि लेल जाइत छैक, तैयो ई मात्र ''फंतासी'' नहि अछि । एहि कथा सब मे जे विशेषता सब छैक ओ राहुल क यूरोपीय आ भारत-ईरानी शब्दशास्त्र आ ऐतिहासिक भाषा विज्ञान क गहन अध्ययन क फल थीक ।'' जंगल मे प्राकृतिक परिवेश मे रहऽ वाला आदिम मानव सँ प्रारंभ कऽ, राहुल मनुक्ख क कृषि आ पशुपालन अवस्था मे सामाजिक-आर्थिक विकास क रेखा क अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि । जखन पितृसत्ता क समाज सुप्रचलित भऽ गेल, तखन दास प्रथा के सेहो धार्मिक आधार भेटल । रूढ़िवादी विधि सब सँ आ कर्मकांड वाला धर्म ओहि समाज क विजड़ीकरण मे सहायता कएलक । राहुल मात्र एतबा आओर करैत छथि जे वेद, ब्राह्मण, महाभारत, पुराण आ बौद्ध अट्ठकथा सँ उदाहरण दऽ कए एहि इतिहास क भौतिक व्याख्या क आओर समर्थन दैत छथि । ''बंधुल भल्ल'' बौद्ध कथा सब पर आधारित अछि । ''नागदत्त'' कौटिल्य क ''अर्थशास्त्र'' आ काशीप्रसाद जायसवाल क ''हिन्दू पोलिटी'' के, ''प्रभा'' अश्वघोष क ''बुद्धचरित'' आ ''सौंदरानंद'' के आधार मानि के लिखल गेल अछि । राइस डेविड क ''बुद्धिस्ट इंडिया'' मे सेहो एकर ऐतिहासिक साक्ष्य भेटत छैक । ''सुपर्ण यौद्धेय'' कालिदास क कविता सब पर, ''दुर्मुख'' बाण भट्ट क ''हर्षचरित'' आ ''कादंबरी'' पर लिखल गेल अछि, चंक्रपाणि नैपध पर, बीस मे सँ चौदह कथा सब संस्कृत आ पालि ग्रंथ सब के आधार बना कए लिखल गेल अछि ।

अंतिम छः टा कथा मध्ययुगीन आ आधुनिक भारतीय इतिहास सँ संबद्ध अछि । ''बाबा नुरूद्दीन'' क पार्श्व भूमि अछि अलाउद्दीन खिलजी क राज्यकाल । ''सुरैया'' मे अकबर क दरियादिली आ उदारमतवाद के बुनियाद बनाओल गेल अछि; ''रेखा भगत'' मे ब्रिटिश राज क जुलुम सभक साफ खाका राखल गेल अछि । ''मंगलसिंह'' (१८५७), ''सफदर'' (१९२२), आ ''सुमेर'' (१९४२) ओहि कड़ा सामाजिक, आर्थिक आ राजनैतिक तथ्य पर आधारित अछि जकरा राहुल आ हुनकर पूववर्ती पीढ़ी देखलक आ सुनलक ।

विद्वान लोकनि एहि पोथी पर अनेक आरोप लगौलन्हि । किछु गोटे कहैत छथि जे इतिहास के विकृत रूप मे प्रस्तुत कएल गेल, किछु गोटे अनेक अनैतिहासिकता

सब एहि मे देखैत छथि, किछु गोटे एकरा इतिहास क ''मनमाना'' आ पूर्वाग्रहपूर्व चित्रण कहैत छथि । आओर किछु उदाहरण एना दी (१) ''पुरूधान'' आ ''अंगिरा'' मे असुर जाति क वर्णन देल अछि । ई डा. भगवतशरण उपाध्याय क अनुसारे असुरी आ द्राविड़ जाति सभक, सिंधु नदी क किनार पर, मिश्रण थीक । (२) वाल्मीकि रामायण क रचनाकाल राहुल शुंग वंशक मानलनि । डा. रामविलास शर्मा ओहि पर व्यग्यं कयलनि अछि ''की नव समाजशास्त्र अछि ।'' राम शुग सम्राट क प्रतीक छथि, आव राहुल इहो वता देथि जे दशरथ, कौशल्या, सीता, रावण क मूल ऐतिहासिक आधार की अछि ।'' डा. रामविलास शर्मा अपन वामपक्षी उत्साह मे मात्र राहुले टा क नहि हजारीप्रसाद द्विवेदी के सेहो ''ब्राह्मण'' संकीर्णतावादी आ पुनरूत्थानवाद कहि देने छथि (३) ''सुपर्ण यौद्येय'' मे हूण लोकनि के पराजित कर वाला राजा समुद्रगुप्त वताओल गेल अछि । मुदा ओ छल स्कन्दगुप्त (४) ''दुर्मुख'' मे हर्षवर्धन क भाई राज्यवर्धन के कान्यकुब्धाधिपति कहल गेल अछि ।

वस्तुत: ओ स्थाणेश्वर (आधुनिक थानेसर) क शासक छलाह । हर्ष के क्षत्रिय सातवाहन लोकनि क वंश सँ संवद्ध वताओल गेल अछि, मुदा सातवाहन ब्राह्मण छलाह, आ ओ हर्ष क पूववर्ती नहि छलाह । (५) जयचंद क जेहन चित्र कथा मे अछि ओ मूल ऐतिहासिक व्यक्तित्व सँ मिलैत-जुलैत नहि अछि । मुसलमान इतिहासकार लोकनि ओकरा योद्धा क रूप मे चित्रित कयने अछि, राहुल ओकरा वृद्ध विलासी स्त्री-लंपट देखौने छथि । (६) ''सुरैया'' मे नायिका के अुवल फजल क बेटी देखाओल गेल छैक, जे टोडरमल क पुत्र कमल सँ विवाह करैत अछि आ दूनू यूरोप यात्रा पर चलि जाइत अछि, ई इतिहास क कनी बेसी दूर धरि खींच तान अछि ।

एहि सव दोप क वादो, ई पोथी वहुत वेशी विशेपतापूर्ण अछि, ओकर पूरा प्रकल्पना आ ओकर निर्वाह दूनू नव अछि। आठ हजार वरख क इतिहास के एहि पोथी क ३८६ अत्यन्त पठनीय पृष्ठ सव मे एहि तरहे भरि देल गेल छैक जेना ''गागर मे सागर'' । एहि मे एक टा आलोचक आ सृजनशील लेखक क संश्लिष्ट दृष्टि क परिपाक अचि । एहि मे कथा लेखक क कथन कौशल आ इतिहासकारक क शुष्क विवरण क लेल प्रेम क दुर्लभ संगम पाओल जाइत अछि । एहि पोथी पर साहित्य क्षेत्र मे बड़ पैघ विवाद उठि ठाढ़ भेल छल । किछु गुमनाम साधु लोकिन विश्ववंधु पत्रिका मे ''नग्नवादी वेदनिंदक राहुल'' नामक लेख मे निंदा कयलन्हि । मुदा एहि पोथी केर भारतीय स्वतंत्रता सं पूर्व एतेक बेशी लोकप्रियता छलैक जे, गोर्की क ''माँ'' जकाँ, ई सहज रूपे सब भारतीय भापा सब मे अनुवादित भेल आ ओकर अनेक संस्करण प्रकाशित भेलैक । अंग्रेजी, रूसी, चेक, पोलिश आ अन्य विदेशी भापा सव मे ओकर अनुवाद लोकप्रिय भेल । राहुल क सम्पूर्ण लेखन मे ई पोथी हिंदिये टा क नहि, संपूर्ण भारतीय साहित्य के एक टा ऐतिहासिक देन थीक ।

राहुल प्रेमचंद क विपय मे लिखने छथि :-

"१९१५ क लगभग ओही (जमाना मासिक) मे हमरा प्रेमचंद क नाम आ हुनकर लेखनी सं परिचय प्राप्त करवाक अवसर भेटल । हुनकर लेखनीक लोहा ओहि समय सेहो लोग मानऽ लागल छलाह मुदा हुनकर शैली मे जे एक टा बड़का गुण छल, तकरे हुनकर समसामयिक हिन्दी आ उर्दू क कतेको विद्वान दोप बुझैत छति । प्रेमचंद क जीवन जेहन सीधा-सरल छलन्हि ओही तरहे ओ अपन लेखनी के सेहो अनावश्यक कृत्रिम साज-बाज सँ सजायब पसिन्न नहि करैत छलाह ।.....ओ बहुजन हितक पक्षपाती छलाह आ बहुजन हिताय लिखैत छलाह ..... १९२१ मे छपरा जिला मे आवि कए एक-दू दिन ओतुका रेवतिया" गाम मे रहऽ पड़ल । ओतऽ प्रेमचन्द क दोसर बेर दर्शन भेल । आबहुँ साक्षात नहि मात्र हुनकर कृतिए सभक द्वारा । रवेतिया गाम मे प्रेमचन्द क दू-तीन कृति सब के देखिक हमरा ज्ञात भेल जे प्रेमचन्द हिंदी पाठकगण के एक टा नव आ उच्च दिशा मे आकृष्ट कयने छथि । १९२० मे १९३० क दस बरख मे प्रेमचन्द राष्ट्रीयता, राजनीतिक, जागृति, उच्च आदर्श क प्रसार मे जतेक काज कयलनि ओतेक बहुत रास लेखक सब मीलियो कए नहि कयने छथि । प्राय: १९२६ क साल छल.....बनारसे मे हुनकर साक्षात दर्शन क अवसर भेटल ।.....हमरा सामना मे प्रेमचंद क भापा पर एक टा उर्दू क प्रख्यात् लेखक आ कवि आक्षेप कयलन्हि जे ओ उर्दू नहि जनैत छथि, ओ त पूव क बोली मे लिखैत छथि । हम जनैत छलहुँ जे ई साहित्यिक महाशय लखनऊ क ओहि नवाव क वर्ग क छथि जे बुझैत छथि जे गहूमक सेहो कोनो गाछ होइत छैक । हुनकर लच्छादार उर्दू मे अरवी क शब्द भरल पड़ल छलन्हि । प्राय: ओ स्वयं जौं उपन्यास आ कथा लिखितथि—सौभाग्य सँ खुदा गँजा के नह नहि दैति—नहि त ओ "होरी" क मुँह सँ अपन पसिन्न क बोली बजवावितथि । हिंदी क किछु साहित्यिक लोकनिक सेहो यैह कहव छलन्हि जे हुनकर हिन्दी मे भाखा क मंजल नहि छलन्हि आ ने गहीर छल । किएक त प्रेमचन्द सँ पूर्वो चाहे किछु उपन्यास लिखल गेल हो, लेकिन ओकरा विश्व उपन्यास क सम्मुख नहि राखल जा सकैछ । प्रेमचन्द क एहि विपय मे पहिल प्रयास छल । अन्तिम बेरि जखन प्रेमचन्द क दर्शन क अवसर भेटल त हम जाढ़ क दिन मे सारनाथ सँ मील डेढ़ मील क दूरी पर छलहुँ (जतए हमरा एक टा टूटल मूर्ति क माथ भेटल छल । ओ कोनो देवता क मूर्ति नहि छल, अपितु एक प्राग-इस्लामिक आ आदि इस्लामिक काल क पुरूख क मूर्ति छल, सेहो कोनो कायस्थ क । माथ क केश क बनावट एवं गाम मे कायस्थ सभक प्रधानता एही दिस संकेत करैत अछि । भऽ सकैत अछिजे ओ प्रेमचन्दक कोनो पूर्वज क हो । मूर्ति हम प्रयाग म्यूजियम के पठबा देलियैक । ओतऽ पटिया पर बैसल जहन हमरा लोकनि गप्प कऽ रहल छलहुँ तखनहि हमरा मोन भऽ आएल जे ओ हमरा लोकनि क अंतिम गप अछि । जाढ़ बितला क बाद हम तिब्बत गेलहुँ आ ओतहि हुनक देहावसान क खबरि भेटल । हुनकर कृति सभक जतेक श्रेष्ट नाम सब अछि, ओकरे सभक मूर्ति हमरा प्रेमचन्द क रूप मे ओहि दिन देखबा मे आएल । प्रेमचन्द भारत क अमर लेखक आ कहानीकार

छथि । शताब्दी पर शताब्दी बीतैत जाएत प्रेमचन्द क देखल-बुनल, खेलाएल-खाएल, कानल-गाएल दुनिया क कतहु पृथ्वी पर पता नहि रहत, ओहि काल मे प्रेमचन्द क ई चिंतन कम मनोरंजन और उत्साहवर्धक नहि हेत ।''

(राहुल निबंधावली : पृ. ७ ९)

दू खंड मे लिखल पैघ ''मध्य एशिया क इतिहास'' क अतिरिक्त हुनकर संसार क दार्शनिक विचार धारा सभक, भारतीय दर्शन सभक आ अन्य दर्शन सभक संग तुलनात्मक अध्ययन अछि ''दर्शन-दिग्दर्शन'' । हिंदी मे एकेटा पोथी मे एतवा विवरणयुक्त विश्लेषण देवऽ वाला दोसर पोथी नहि अछि । बौद्ध दर्शन के सौ पृष्ठ आ इस्लामी दर्शन के सवा सौ पृष्ठ एहि मे देल गेल अछि ।

एतय दर्शन-दिग्दर्शन क भूमिका क प्रथम आ अंतिम दू परिच्छेद सभक उद्धरण देवाक लोभ क संवरण हम नहि क सकलहुँ । ई ग्रंथ सेंट्रल जेल हजारीवाग मे १९४२ मे लिखल गेल । एहि उद्धरण सँ राहुल क जीवन आ जगत संबंधी दार्शनिक दृष्टिकोण क सार भेटि जाएत, विशेषत: चारिम दशक मे भारतीय परिस्थिति क विषय मे हुनकर दृष्टि स्पष्ट होइत अछि :

''मानव क अस्तित्व पृथ्वी पर हालांकि लाखो बरख क अछि, तथापि ओकर दिमाग क उड़ान क सब सँ भव्य युग ५०००-३००० ई. पू. अछि, जखन कि ओ खेती, नहर, सौर पंचांग एहन-एहन कतेको अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समाज क कायापलट करऽ वाला आविष्कार कएलक । एहि तरह क मानव-मस्तिष्क क तीव्रता हम फेर १७६० ई. क बाद सँ पबैत छी, जखन कि आधुनिकम आविष्कार क सिलसिला प्रारंभ भऽ गेल । किंतु दर्शन क अस्तित्व त पहिलु क युग मे छलै नहि, आ दोसर युग मे ओ एक टा बूढ़ बुजुर्ग छथि, जे अपन दिन विता चुकल अछि । बूढ़ भेला पर ओकर प्रतिष्ठा अवश्य कएल जाइत छैक, मुदा ओकर बात क दिसि लोक क ध्यान तखनहि जाइत छैक जखन ओ प्रयोग-आश्रित चिंतन''—साइंस—क पहुंचा पकड़ैत अछि । हालांकि एहि बात के सर राधाकृष्णन एहन पुरान ढर्रा क ''धर्म-प्रचारक'' मानबाक लेल तैयार नहि छथि, हुनकर कहब छलन्हि—''प्राचीन भारत मे दर्शन कोनो दोसर सांइस अथवा कल क लग्गू-भग्गू नहि हो, सर्वदा एक टा स्वतंत्र स्थान रखैत रहल अछि ।'' भारतीय दर्शन सांइस अथवा कला क लग्गू-भग्गू नहि रहल हो । किंतु धर्म क लग्गू-भग्गू तओ सर्वदा सँ चलि आएल अछि, आ धर्म क गुलामी आर की भऽ सकैत अछि ?.....

''विश्वव्यापी दर्शन क धारा के देखला सँ ज्ञात होइछ, जे ओ राष्ट्रीय क अपेक्षा अंतर्राष्ट्रीय बेशी अछि । दार्शनिक विचार सभक ग्रहण करबा मे ओ कने बेशी उदारता देखौलनि ताहि सँ जतबा कि धर्म एक दोसर देशक धर्म के स्वीकारबा मे कएलक । ई कहब, अनुचित होइल, जे दर्शन क विचार सभक पाछाँ आर्थिक प्रश्न सभक कोनो आकर्षण नहि छल, तैयो धर्म क अपेक्षा ओ बहुत कम एक राष्ट्र क स्वार्थ के दोसर पर लादऽ चाहतै रहल, तै हम सब जतबा गंगा, आमूदज़ला आ नालंदा-बुखारा-बगदाद-

कार्दोवा क स्वतंत्र स्नेहपूर्ण समागम दर्शन सब मे पवैत छी, ओतवा साइंस क क्षेत्र मे अलग कतहु नहिं पवैत छी । हमरा लोकनि के अफसोस अछि, समय आ साधन क अभाव सँ हमरा लोकनि चीन-जापान के दार्शनिक धारा के नहि लऽ सकलियैक, मुदा ओहनो भेला पर निष्कर्ष मे त कोनो अन्तर नहिं पड़त जे दर्शन क्षेत्र मे राष्ट्रीयता क तान छेड़ऽ वाला स्वयं धोखा मे छथि आ दोसरो के धोखा मे राखऽ चाहैत छथि ।''

(दर्शन-दिग्दर्शन : पृ. ५ और ८)

राहुल सांकृत्यायन, भारतीय आ बौद्धदर्शन क नव व्याख्या मात्र मे मात्र अग्रणी नहि छलाह, प्रगतिशील विचारधारा क भारत मे प्रचार मे प्रमुख छलाह, आ ओ भारतीय सोवियत संस्कृति संपर्क आ विद्वान लोकनिक आदान प्रदान क सेहो आधारशिला रखलन्हि । सोवियत रूस दिस सँ तखन मिनायेव, वरान्निखोवै, श्चेर्वास्की जे किछु कयलन्हि, ओ असगरे राहुल भारतक दिसि सँ कयलन्हि । समाजवादी स्वतंत्र चिंतक आ सोवियत-वैज्ञानिक क रूप मे एहि क्षेत्र मे एहि क्षेत्र मे राहुल क नाम सब सँ पहिल आ अग्रतम रहत ।

हुनकर भाषा आ साहित्य-विषयक सामान्य विचार सभक आ विशेषत: हिंदी आ देवनागरी पर आग्रहक पहिनहिं उल्लेख भऽ चुकल अछि । ई सम्पूर्ण उत्तर भारत मे, सरल हिंदी के, सबके बुझबा मे आवऽ वाला, सर्वसाधारण क भाखा मानैत छलाह । ओ अंग्रेजी अथवा कोनो विदेशी भाषा क विरोध क लेल विरोधी नहि छलाह, मुदा अंग्रेजी क साहबियत आ दंभ, एवं अन्य भारतीय मातृभाषा सभक ऊपर हठी क विरोधी छलाह ओ मानैत छलाह जे ई स्थिति अस्वाभाविक थीक । लेकिन ओ हिंदी-साहित्य क सीमा सँ सेहो परिचित छलाह । ओ १९४० धरि हिंदी मे नाटक के सब सँ कमजोर विधा मानैत छलाह । वैज्ञानिक साहित्य मे सेहो हिन्दी भाखा अन्य भारतीय भाखा सबसं पाछां छल । ओ हिंदी व्याकरण के सरल बनयबा क पक्षधर छलाह । ओ पाणिनी क उद्धरण देलनि जे संस्कृत मे सेहो कतेको उदीच्य आ प्रतीच्य भेद सब के ओ स्वीकार कयलन्हि । ओ देवनागरी आ हिंदी क शीघ्र विकास करऽ चाहैत छलाह ।

साहित्य क समीक्षा मे ओ सामाजिक उपयोगिता वाला एहन प्रगतिशील साहित्य क पक्षधर छलाह जे विकासशील जन-धन क अधिकाधिक आवश्यकता सब के ध्यान मे राखय । ओ मात्र ''हाथीदांत क मीनार'' धरि सीमित आ मुट्ठी भरि समृद्ध, शिष्ट, संभ्रांत लोक सभक लेल लिखऽ जाएवाला साहित्य क विरोधी छलाह । एक स्थान पर कथा-कविता मे स्थानीय रंग आ प्रादेशिकता अंकित करबाक आवश्यकता परओ लिखैत छथि—''हिंदी साहित्य मे एहनो एक टा त्रुटि देखबा मे अबैछ । चाहे बिहार क धान क खेत क विस्तीर्ण मैदान हो, चाहे गढ़वाल क देवदारू वृक्ष सबसँ अच्छादित हिमालय क पर्वत श्रेणी सब हो अथवा शिखर, चाहे भाखड़ा क भूमि हो अथवा जबलपुर क विन्ध्याटवी, सब ठामक लेखक आ कवि बूझू अपना मे गप्पं क स्वीरोक्ति लऽ चुकल छथि जे भरिसक ओ अपन-अपन लेख मे एहि स्थानीय दृश्य के आब स्थान नहि

देताह । एहि कारणे हिन्दी साहित्य मे रचना- व चित्र नहि आवि सकल ।''

(साहित्य निबंधावली (१) पृ. ८)

ओ स्पष्ट शब्द मे कहैत छथि—''प्रगतिशील लेखक कोनो सम्प्रदाय अथवा छोट गुट क नहि होइछ। प्रगतिवाद क उद्देश्य छैक बंद रास्ता के खोलव आ ओकराव्यापक बनाएव । प्रगतिवाद कलाकार क स्वतंत्रता क शत्रु नहि होइछ, अपितु कलाकार क दासता आ बंधन क शत्रु होइछ ।''

हुनकर दृष्टि मे प्रगतिशील लेखक जनता के लेखक होइछ । ओ जनता क भाखा क उपयोग करैत छथि आ जनता क पक्ष मे लिखैत छथि । ''जन साधारण क सब सँ पैघ मित्र आ सहयोद्धा लेखक होइछ । ओ ओकर नेता होइछ । ओ सिपाही सेहो होइत छैक आ सेनापति सेहो । एहि लेल ओकरा सर्वदा जनसाधारण क समानधर्मा आ अपना के ओही मे सँ एक मानवाक चाही।''

एहन चिंतक राहुल, स्वभावतः, ''कला कलाएक लेल'', क विरोधी छलाह । ओ लोक कला, लोक-संगीत, लोक-नृत्य क पक्ष मे छलाह । ओ एहि कला रूप सब के मात्र म्यूजियम क वस्तु सब अथवा शहराती लोक सभक मनोरंजन क माध्यम नहि मानैत छलाह । हुनकर विचार मे कला सोद्देश्य हेवाक चाही आ ओ उद्धेश्य दीन-दरिद्र आ पछुआएल लोक सभक एक टा एहन समानता पर आधारित समाज क निर्माण क हो जतऽ सब के सर्वाधिक अवसर भेटतैक आ अभाव सँ मुक्ति ।

अंत मे हुनकर ''बुद्ध आ गांधी'' निबंध क किछु उद्धरण दऽ रहल छी (पुस्तक मे ई टिप्पणी छैक जे मूल अंग्रेजी मे लिखल गेल छैक, जकर मूल हेरा गेल छैक), जे गांधी वध क बाद हिंदी मासिक पत्र ''आजकल'' क १९४८ क अंक मे प्रकाशित भेल । ई १५ अगस्त, १९४७ आ ३० जनवरी, १९४८ क बीच कखनहुँ लिखल गेल अछि । एहि मे हुनकर पुरान कटु गांधी विरोधी आलोचना क ओ मात्र स्वप्नदर्शी छथि, अथवा ओ मात्र पैघ पूंजीपति लोकनि क एजेंट छथि अथवा ओ अहिंसक रामराज मे विश्वास करऽ वाला आदर्शवादी छथि, बदलि गेल अछि । एहि श्रद्धांजलि मे ओ ''बुद्ध आ गांधी'' एहि दू महापुरुष लोकनि क तुलना करने छथि :

''बुद्ध प्राणीमात्र क भलाई चाहैत छलाह—''सब्बे सन्ता भवंतु सुखी तत्ता ।'' परन्तु ओ निष्क्रिय स्वप्नद्रष्टा नहि छलाह । ओ यथार्थवादी छलाह । तैं जखन ओ अपन शिष्यमंडली के कर्मक्षेत्र मे उतरबा क आदेश देलन्हि, बौद्धधर्म क प्रचार करबाक प्रेरणा देलन्हि त ओ ई नहि कहलन्हि जे समस्त प्राणी लोकनिक हित क लेल प्रयत्नशील रहब, ओ ई कहलन्हि जे बहुत जनक हित के लेल, बहुत जन क सुख क लेल (बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय) विचरण करू । ओ जनैत छलाह जे बहुत गोटो क हित आ सुख कखनहुँ-कखनहुँ किछु गोटे क हित क विरुद्धो होइत छैक । समाज विपरीत हित सब मे बँटल अछि । हुनकर विचार मे आदि मानव सांसारिक वस्तु सभक जे उपभोग करैत छल, वेह आदर्श छल । ओ लोभ जे ओकर ओहि समानता क नाश क देलकैक

एवं वैयक्तिक संपत्ति क जन्म देलकैक, मौलिक अपराध छल जाहि कारणे मानवता एखन धरि दुःख भोगि रहल अछि आ भोगैत रहत । हुनकर मतानुसार एहि वैयक्तिक संपत्ति क लोभ चोरी क जन्मदाता थीक आ चोरी सँ हत्या आ कलह उत्पन्न होइछ । एहि खराबी सब सँ बचबा क लेल मनुकरन राजा क स्वीकार कएलक । हुनका मानव समाज क एहि रोग क कोनो औषधि नहि भेटलन्हि । ओ अपन ढंग सं अपन भिक्षु सब एवं भिक्षुणी सब मे साम्यवाद क प्रचार करबा क प्रयास कयलन्हि । अंतिम उपदेश जे ओ दैल छथि ओ ई छल जे "नहि वेरेण शाम्यतीय कदाचन" । "बुद्ध क पश्चात् गांधीक अतिरिक्त कोनो एहन अन्य महापुरुष नहि भेल छलाह जे संपूर्ण समाज के एतेक महान संदेश दऽ सकितथि । हुनकर दर्शन मे बुद्ध क मौलिकता नहि छलन्हि । जौ दार्शनिक पृष्ठभूमि सँ अलग कऽ के देखल जाए त महात्मा गांधी क सत्य आ अहिंसा एक व्यक्ति क वहम मात्र प्रतीत होइछ । गांधीजी मानवमात्र क लेल छलाह । ओ जीवन-भरि बहुजनहिताय संघर्ष कयलनि । हम त एतऽ धरि कहबाक लेल तैयार छी जे एहि उद्देश्य क पूर्ति मे हुनका अपन जीवन मे बुद्ध सँ बेसी कष्ट सहऽ पड़लन्हि । बुद्ध यात्रीदल धरिक उपर घातक आक्रमण करऽ वाला अंगुलीमालक जानि-बुझि क सामना कयलन्हि । महात्माजी त सौ-सैकड़ा बेर लोक क बचयबा क लेल अपन जान खतरा मे देलन्हि । जाति-भेद क भेटयबा आ सहस्त्रो मनुक्ख क जीवन बचयबा मे दक्षिण अफ्रीका मे गांधी जी बोअर लोकनि क विरूद्ध अपन जान क बाजी लगा देने छलाह । कलकत्ता, दिल्ली एवं अन्य स्थान सब मे सांप्रदायिक सद्भावना स्थापित करबा क लेल गांधीजी जतबा, प्रयत्न कयलन्हि, तकरा के नहि जनैत अछि । ओ एक टा महान् आत्मा छथि, एहि मे के संदेह कऽ सकैत अछि ?

"यद्यपि गांधीजी परमात्मा आ अपरिवर्तनशील जगत् के मानऽ वाला दर्शन मे विश्वास करैत छलाह, मुदा अपन काज मे ओ जड़ नहि छलाह । बहुजन-हिताय क विचार हुनकर नस-नस मे बसल छलन्हि जे अनजान मे हुनका अपन व्यक्तित्व मे परिवर्तन करबा क लेल धीरे-धीरे विवश करैत रहैत अछि । ई दुःख क बात थीक जे ओ बुद्ध क गति पूर्ण दर्शन के अपन लक्ष्य मानि के ग्रहण नहि कयलन्हि । बहुत दिन सँ गांधीजी क एक टा नव रूप प्रकट भऽ रहल अछि, ओ भारतीय जनता क राजनैतिक स्वतंत्रता मात्र सँ संतुष्ट नहि देखबा मे अबैत छथि, ओ हुनकर आर्थिक स्वाधीनता क विषय मे सेहो सोचऽ लगलाह अछि । बुद्ध जकाँ ओहो लोक सब द्वारा अपन समाज पर प्रभुत्व आ विषमता क शाप के अनुभव कर लागल छथि । ओ स्पष्ट शब्द मे देशी राजा सभक निरंकुशता क भर्त्सना करैत छथि । एहि सँ हमरा लोकनिक महान् समस्या सभक विषय मे हुनकर दृष्टिकोण क पता चलैत अछि । ओ समाजवाद क बात करैत छथि, मुदा बेसी जोर ओ सत्ये आ अहिंसा पर दैत छथि । कोनो समाजवादी सत्यक शत्रु नहि होइछ आ ने कोनो समाजवादी हिंसा क लेल हिंसा चाहैत अछि । वास्तव मे समाजवादी अथवा साम्यवादी हिंसा के आत्मरक्षा क साधन क रूप मे स्वीकार करैत अछि आ ओहो कखन,

जखन समस्या सभक शांतिपूर्वक समाधान क साधन बंद व काइत छैक आ आततायी हिंसक क रूप मे एकदम खुजल आक्रमण कऽ दैत छैक ।

''निकट भविष्य मे पूंजीपति सब आ निरंकुश वर्ग क असहनीय विशेषाधिकार सब के समाप्त करबाक लेल महान संघर्ष प्रारंभ होमऽ वाला अछि । हमरा पूर्ण विश्वास आ आशा अछि जे ओ अपन अहिंसा क सक्रिय शक्ति क कारणें वर्गातीत आततायी लोकनि सँ सरिपहुं बेसी जोरगर छथि । ओ शोणित क एक बुन्न बहौने बिना जमींदार लोकनिक अविरत, कार्यहीन प्रणाली क अंत कऽ कए समाज मे सँ सदिखन क लेल वर्ग-जन्म अत्याचार क अंत कऽ देताह । हमरा लग मे समय बड़ कम अछि । हम हुनकर दीर्घायु देबाक कामना करैत छियन्हि । मुदा गांधी जी क जीवन क सीमा त अछिए । की महात्मा जी एहि विषय मे शीघ्रे निश्चय कऽ लेताह जे ओहि महान क्रांति केर, जे अहिंसात्मक नेतृत्व क आर्थिक वर्ग भेद के समाप्त कए जनता के देश क वास्तविक स्वामी बनौताह ? हुनकर नेतृत्व भारत के राजनैतिक रूप सँ स्वाधीनता दियौलक । इतिहास आ मानवता हुनकर एहि नेतृत्व के सदिखन स्मरण करत । जौं एहि वृद्धावस्था मे अपन परिपक्व अनुभव क लेल गांधीजी भारतीय जनता के आर्थिक बंधन सब सँ एवं वर्गजन्य अत्याचार सँ मुक्त करयबा मे सफल भऽ गेलाह त ओ काज संपन्न कऽ जैताह जकरा अपन सद्भावना रहितो बुद्ध नहि कऽ पौलाह । जौ एना भऽ गेल त मानव आनंद क प्राप्ति मे महात्मा गांधी बुद्ध सँ सेहो आगां बढ़ि जेताह आ इतिहास हुनका एही रूप मे स्मरण राखत ।''

(अतीत से वर्तमान : पृ. १२०-१३३)

परिशिष्ट १

राहुल क जीवन क प्रमुख घटना सब

९ अप्रैल १८९३	:	ग्राम पंदहा, जिला आजमगढ़, उत्तरप्रदेश मे, नानी गाम मे जन्म । पिता : गोवर्धन पांडे । माय : कुलवंती देवी । चारि भाय आ एक बहिन क बीच सबसं पैघ । जन्म नाम : केदारनाथ पांडे ।
१९१२-१३	:	परसा मठ मे साधु आ संभावित मठाधीश
१९१३-१४	:	दक्षिण भारत क यात्रा ।
१९२२	:	बक्सर जेल मे छौ मास । जिला कांग्रेस क सचिव ।
१९२३-२५	:	हज़ारीबाग जेल मे ।
१९२७-२८	:	श्रीलंका मे संस्कृत क अध्यापक । बौद्ध साहित्य क अध्ययन ।
१९२९-३०	:	तिब्बत मे सवा साल ।
१९३२-३३	:	इंगलैंड आ' यूरोप मे ।
१९३४	:	तिब्बत क दोसर यात्रा ।
१९३५	:	जापान, कोरिया, मंचूरिया, सोवियत रूस या ईरान क यात्रा ।
१९३६	:	तिब्बत क तेसर यात्रा ।
१९३७	:	सोवियत रूस क दोसर यात्रा ।
१९३८	:	तिब्बत क चारिम यात्रा । पुत्र ईगोर क जन्म ।
१९३९	:	अमवारी में किसान सत्याग्रह आ' जेल ।
१९४०-४२	:	हजारीबाग जेल आ' देवली बंदी कैंप मे ।
१९४३	:	चौंतीस वरखक बाद अपन जन्म ग्राम मे पुनरागमन । प्रथम पत्नी भेट क लेल अयलीह । उत्तराखंड यात्रा ।
१९४४-४७	:	सोवियत रूस मे लेनिनग्राद मे प्रोफेसर ।
१९४७-४८	:	हिंदी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद क बंबई अधिवेशन क अध्यक्ष ।

१९५०	:	मसूरी मे एक टा मकान कीनलनि जे वाद मे ओ वेचि देलनि ।
१९५३	:	पुत्री जया क जन्म ।
१९५५	:	पुत्र जेता क जन्म ।
१९५८	:	चीन क गणकारी जनतंत्र में साढ़े चारि मास ।
१९५९-६१	:	श्रीलंका मे दर्शन क प्रोफेसर ।
दिसंवर १९६१	:	स्मृति नाश ।
१९६२-६३	:	सोवियत रूस मे सात मास क इलाज ।
१४ अप्रैल १९६३	:	मृत्यु ।

राहुल सांकृत्यायन के प्राप्त सम्मान

१. महापडित : काशी पंडित सभा ।
२. त्रिपिटकाचार्य : विद्यालंकार परिवेण, श्रीलंका ।
३. साहित्य वाचस्पति : हिंदी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ।
४. डी. लिट (मानद) : भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर ।
५. डी. लिट (मानद) : विद्यालंकार यूनिवर्सिटी, श्रीलंका ।
६. पद्म भूषण : भारत सरकार ।

परिशिष्ट : २

राहुल सांकृत्यायन क कृति सब

साहित्यिक कृति

हिंदी

उपन्यास

१. बाईसवीं सदी १९२३
२. जीने के लिए १९४०
३. सिंह सेनापति १९४४
४. जय योधेय १९४४
५. भागो नहीं, दुनिया को बदलो १९४४
६. मधुर स्वप्न १९४९
७. राजस्थानी रनिवास १९५३
८. विस्मृत यात्री १९५४
९. दिवोदास १९६०

कथा सभ

१०. सतमी के बच्चे १९३५
११. वोलगा से गंगा १९४४
१२. बहुरंगी मधुपुरी १९५३
१३. कनैला की कथा १९५५-५६

आत्मकथा

१४. मेरी जीवन यात्रा (५खंड-१. १९४४ २. १९५०
(३) खंड मरणोपरांत प्रकाशित

जीवनी सब

१५. सरदार पृथ्वी सिंह १९५५
१६. नये भारत के नये नेता १९४२ (दू खंड)
१७. वचपन की 'स्मृतियां १९५३
१८. अतीत से वर्तमान (खंड—१) १९५३
१९. स्तालिन १९९५४
२०. लेनिन १९५४
२१. कार्ल मार्क्स १९५४
२२. माओ-त्से-तुं १९५४
२३. घमुक्कड़ स्वामी १९५६
२४. मेरे असहयोग के साथी १९५६
२५. जिनका मैं कृतज्ञ १९५६
२६. वीरचन्द्र सिंह गढ़वाली १९५६
२७. सिंहल घुमक्कड़ जयवर्धन १९६०
२८. कप्तान लाल १९६१
२९. सिंहल के वीर पुरुप १९६१
३०. महामानव वुद्ध १९५६

यात्रा वृत्तांत

३१. मेरी लद्दाख यात्रा १९२६
३२. लंका १९२६-२७
३३. मेरी यूरोप यात्रा १९३२
३४. मेरी तिब्बत यात्रा १९३७
३५. यात्रा के पन्ने १९३४-३६
३६. जापान १९३५
३७. ईरान १९३५-३६
३८. रूस में पच्चीस मास १९४४-४७
३९. किन्नर देश १९४८
४०. तिब्बत में सवा वर्प १९३१
४१. घुमक्कड़ शास्त्र १९४९
४२. एशिया के दुर्गम भू-खंडों में १९५६
४३. चीन में क्या देखा ? १९६०

निबंध

४४. साहित्य निबंधावली १९४९

४५. पुरातत्व निवंधावली १९३६
४६. दिमागी गुलामी १९३७
४७. तुम्हारी क्षय १९३७
४८. आज की. समस्याएं १९४४
४९. साम्यवाद ही क्यों ? १९३४
५०. अतीत से वर्तमान (खंड-२) १९५३

भोजपुरी

५१. तीन नाटक १९४२
५२. पांच नाटक १९४२

तिब्बती

५३. तिब्बीत वाल शिक्षा १९३३
५४. पाठावली (भाग-१,२,३) १९३३
५५. तिब्वती व्याकरण १९३३

साहित्येतर कृतिसब

हिंदी

विज्ञान

१. विश्व की रूपरेखा १९४२

समाजविज्ञान

२. मानव समाज १९४२

राजनीति

३. सोवियत न्याय १९३९
४. राहुल जी का अपराध १९३९
५. आज की राजनीति १९४९
६. कम्युनिस्ट क्या चाहते हैं ? १९५३
७. क्या करें ? १९३७
८. चीन में कम्यून १९६०
९. सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास १९३९
१०. रामराज्य में मार्क्सवाद

दर्शन

११. वैज्ञानिक भौतिकवाद १९४२
१२. दर्शन-दिग्दर्शन १९४२
१३. बौद्ध-दर्शन १९४२

धर्म

१४. बुद्ध-चर्चा १९३०
१५. धम्मपद १९३३
१६. मजिझम निकाय १९३३
१७. विनय पिटक १९३४
१८. दीर्घ निकाय १९३५
१९. तिब्बत में बौद्ध धर्म १९३५
२०. बौद्ध संस्कृति
२१. इस्लाम की रूपरेखा १९२३

यात्रा

२२. सोवियत भूमि
२३. सोवियत मध्य एशिया
२४. दार्जीलिंग परिचय १९५०
२५. कुमायूं १९५१
२६. गढ़वाल १९५२
२७. जौनसार देहरादून १९५५
२८. आज़मगढ़ की पुराकथा
२९. हिमाचल प्रदेश १९५४ (अप्रकाशित)
३०. नेपाल १९५३

कोश आ शब्दावली

३१. शासन शब्द-कोश १९४८(पं. विद्यानिवास मिश्र आ प्रभाकर माचवे सह संपादक)
३२. तिब्बती हिंदी-कोश (भाग-१) १९७४ (साहित्य अकादेमी)

साहित्येतिहास

३३. हिंदी काव्यधारा (अपभ्रंश) १९४४
३४. दक्खिनी काव्यधारा : १९५२

लोकसाहित्य

३५. आदि-हिंदी की कहानियां और गीत १९५०

शोध

३६. सरहपाद का दोहा-कोश १९५४

इतिहास

३७. मध्य एशिया का इतिहास (खंड १ और २) १९५२
३८. ऋग्वैदिक आर्य १९५६
३९. अकबर १९५६
४०. भारत में अंग्रेजी राज्य के संस्थापक १९५७
४१. पालि साहित्य का इतिहास

संकलन

४२. तुलसी रामायण संक्षेप १९५७
४३. सूत्र-कृतांग (संपादित) संस्कृत
४४. संस्कृत काव्यधारा (संस्कृत) १९५५
४५. पालि काव्यधारा (अप्रकाशित)

अनुवाद

४६. शैतान की आंख १९२३
४७. विस्मृति के गर्भ मे १९२३
४८. जादू का मुल्क १९२३
४९. सोने की ढाल १९२३
५०. दाखुदां १९४७
५१. जो दास थे १९४७
५२. अनाथ १९४८
५३. संविधान का मसौदा १९४८
५४. अदीना १९५१
५५. सूदखोर की मौत १९५१
५६. शादी १९५२

संस्कृत (संपादन, अनुवाद, शोध)

५७. संस्कृत पाठमाला (पांच खंड) १९२८

५८. अभि धर्मकोश १९३०
५९. विज्ञप्ति मात्रता सिद्धि १९३४
६०. देतु विंदु १९४४
६१. संवंध परीक्षा १९४४
६२. निदान-सूत्र (परीक्षा) १९५१
६३. महापरिनिर्वाण सूत्र १९५१
६४. वाद-न्यास
६५. प्रमाण-वार्तिक १९३५
६६. प्रमाण वार्तिक भाष्य १९३५-३६
६७. प्रमाण वार्तिक भाष्य १९३५-३६
६७. प्रमाण वार्तिक वृत्ति १९३६
६८. प्रमाण वार्तिक स्व-वृत्ति टीका १९३७
६९. प्रमाण वार्तिक स्व-वृत्ति टीका १९३७
७०. अध्याय शतक १९३५
७१. विग्रह-व्यावर्तिनी
७२. विनय सूत्र १९४३

राहुल क अन्य भाषा सब मे अनूदित कृति सब

१. सिंह सेनापति : उर्दू, मराठी, गुजराती, तेलुगू
२. जय यौधेय : मराठी, गुजराती
३. वोलगा से गंगा : उर्दू, सिंधी, गुजराती, मराठी, कन्नड, मलयालम, तमिल, तेलुगु, ओडिया, वंगाली, असमिया, नेपाली, वर्मी, अंग्रेजी, रूसी
४. मधुर स्वप्न : गुजराती
५. सरदार पृथ्वी सिंह : मराठी, गुजराती
६. वैज्ञानिक भौतिकवाद : वंगाली
७. दर्शन-दिग्दर्शन : वंगाली, मलयालम
८. तिव्वत में सवा वर्ष : वंगाली
९. बाईसवीं सदी : उर्दू, गुजराती, मराठी
१०. साम्यवाद ही क्यों ? : उर्दू, तमिल
११. मानव-समाज : बंगाली, गुजराती
१२. विश्व की रूपरेखा : मलयालम
१३. संस्कृत पाठशाला : सिंहली

117120
9.12.04

सुविख्यात इतिहासक विद्वान डॉ. काशीप्रसाद जायसवाल राहुल सांकृत्यायनक तुलना भगवान बुद्ध सँ कयलनि अछि। राहुलजीक व्यक्तित्व सेहो हुनक अपन उपलब्धिये जकाँ प्रभावशाली आ चिरस्मरणीय छनि । ओ अनेक यात्रा कयलनि तथा हिन्दी, संस्कृत, भोजपुरी, पालि एवं तिब्बती भाषा सबहि पर हुनक असाधारण अधिकार छलनि। हुनक प्रकाशित ग्रंथमे आत्मकथा, दर्शन, बौद्धमत, तिब्बत शास्त्र, शब्दकोश, व्याकरण, भाष्य एवं टीका, शोध, लोक-साहित्य, विज्ञान, कथा-साहित्य, नाटक, निबंध, राजनीति आओर फुटकर लेखन सम्मिलित छनि ।

1944 मे प्रभाकर माचवे राहुल सांकृत्यायनक घनिष्ठ सम्पर्क मे आयल छलाह तथा 1963 मे राहुलजीक मृत्युपर्यंत हुनक निकटतम मित्र बनल रहलाह । एहि पोथीमे माचवेजी राहुलजीक जीवनक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत हमरालोकनिकेँ भारतीय साहित्यमे हुनक अमूल्य योगदान दिस आकर्षित कयलनि अछि ।

Library IIAS, Shimla
MT 813.2 Sa 58 M
00117120

ISBN 81-260-0179-8

पचीस टाका